A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 27 जुलाई, 2025
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 287, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

04 - सरल सहज काव्य रूप में अभिव्यक्त गीता

05 - एक अच्छी कविता एक अच्छा चित्र ही होता है: कुंवर रवींद्र

06 - खंडवा में अभिनेता आशीष पेंडसे का अभिनंदन

07 - बूढ़े होते बॉलीवुड में 'सैयारा' की नवबहार

सुबह सवेरे
subahsaverenews@gmailÐcom
facebookÐcom/subahsaverenews
wwwÐsubahsavereÐnews
twitterÐcom/subahsaverenews

धरोहर

विदिशा जिले का ग्यारसपुर का मालादेवी मंदिर अपनी नक्काशी और शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है। गुप्तोत्तर वास्तुकला का प्रतिनिधि यह मंदिर गुर्जर प्रतिहार शैली में एक चट्टान को काटकर बनाया गया है। फोटो: मणिमोहन

हे भगवान अब खुद को कहां सेफ फील करें बेटियां!

होमगार्ड अभ्यर्थी दौड़ में हुई बेहोश तो एंबुलेंस चालक ने कर दिया रेप

गयाजी (एजेंसी)। होमगार्ड बहाली के दौरान बेहोश हुई महिला अभ्यर्थी के साथ एंबुलेंस चालक पर दुष्कर्म करने के आरोप लगे हैं। इस मामले में पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गयाजी के बोधगया स्थित होमगार्ड की बहाली की फिजिकल दौड़ चल रही थी। दौड़ में भाग लेने आई एक महिला अभ्यर्थी दौड़ने के दौरान मूर्छित होकर गिर गई। उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाने के दौरान एंबुलेंस में ही चालक और एक टेक्नीशियन ने दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया है। पीड़ित अभ्यर्थी गयाजी जिले के इमामगंज की रहने वाली बताई जा रहे है। दुष्कर्म के आरोप में बोधगया थाने की पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए

आरोपी की पहचान विनय कुमार जो एंबुलेंस चालक है। जो जिले के उतरन कोच निवासी है। दूसरा आरोपी अजीत कुमार टेक्नीशियन के पद पर कार्यरत है, जो नालंदा जिले के चांदपुर का निवासी है। दोनों दुष्कर्म आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि पीड़ित होमगार्ड भर्ती दौड़ में दौड़ने के दौरान मूर्छित होकर गिर पड़ी थी। उसे एंबुलेंस से इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया था। एंबुलेंस में ही दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया गया। पीड़िता ने आरोप लगाया है कि अस्पताल ले जाने के दौरान एंबुलेंस के अंदर ही एंबुलेंस ड्राइवर और कर्मी ने उसके साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया गया है।

कारगिल दिवस पर सेना की नई 'रुद्र ब्रिगेड' का ऐलान

आर्मी चीफ ने कहा-भारतीय सेना के आधुनिकीकरण के लिए जरूरी

कहा-
- अब बॉर्डर पर दुश्मन का काम तमाम करेगी यह नई 'रुद्र ब्रिगेड'

आर्मी चीफ बोले-
- रुद्र ब्रिगेड में कई लड़ाकू इकाइयां की जाएंगी शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कारगिल विजय दिवस के अवसर पर 'रुद्र' नाम की नई 'सर्व-शस्त्र ब्रिगेड' की घोषणा की है। आर्मी चीफ ने यह कदम भारतीय सेना के आधुनिकीकरण को लेकर उठाया है। बॉर्डर पर पाकिस्तान और चीन की साजिश के खिलाफ यह बहुत बड़ा फैसला माना जा रहा है। आर्मी चीफ ने कहा कि आज की भारतीय सेना न केवल वर्तमान चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर रही है, बल्कि दुश्मनों की रणनीति के खिलाफ खुद को मजबूती से तैयार करने में लग गई है। 'रुद्र

ब्रिगेड' भारतीय सेना की नई इकाई है, जिसमें विभिन्न प्रकार की लड़ाकू इकाइयों को एक साथ मिलाया गया है। ये ब्रिगेड सीमाओं पर तैनात होंगे। इस ब्रिगेड के पास खतरनाक हथियार होंगे जिसे देखते ही सीमा पर के दुश्मन कांप उठेंगे। यह ब्रिगेड पाकिस्तान और चीन की साजिश को झटके में नाकाम करने की ताकत रखती है। इसी तरह, सीमा पर दुश्मन के छक्के छुड़ाने के लिए एक और घातक विशेष बल इकाइयां, 'भैरव' लाइट कमांडो बटालियन की स्थापना की गई है। जनरल द्विवेदी ने कहा कि भैरव लाइट कमांडो यूनिट से हमारी ताकत कई गुना बढ़ जाएगी। उन्होंने कहा कि अब हर पैदल सेना बटालियन में ड्रोन प्लाटून शामिल हैं, जबकि तोपखाने ने अपनी मारक क्षमता कई गुना बढ़ा दी है।

डेमोक्रेटिव ग्लोबल लीडर अप्रूवल रेटिंग में मोदी टॉप पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शनिवार को जारी डेमोक्रेटिव ग्लोबल लीडर अप्रूवल रेटिंग में टॉप स्थान प्राप्त किया है। उन्हें 75 फीसदी अप्रूवल रेटिंग मिली है। दूसरे स्थान पर दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति ली जे म्यंग हैं। जे म्यंग को 75 फीसदी अप्रूवल रेटिंग मिली है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को अंडर 5 में जगह नहीं मिली है। ये आंकड़े अमेरिका स्थित व्यवसायिक खुफिया फर्म मॉर्निंग कंसल्ट जारी करती है। ट्रम्प को 45 फीसदी से कम अप्रूवल रेटिंग के साथ आठवां स्थान मिला है। यह ताजा ग्लोबल लीडर अप्रूवल रेटिंग 4 से 10 जुलाई 2025 के बीच की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मातृशक्ति उत्सव के अंतर्गत महिला सम्मेलन को किया संबोधित

बहन-बेटियों के लिए सम्मान का प्रतीक है 'लाड़ली बहना योजना' : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी सरकार महिलाओं की आर्थिक प्रगति के साथ सामाजिक समरसता और सभी की अधिकार सम्पन्नता के लिए सामाजिक रचना के ताने-बाने में सभी स्तर पर आवश्यक योगदान दे रही है। इसी का परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की मंशा के अनुरूप किसान, युवा, गरीब कल्याण और महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाएं और कार्यक्रम संचालित हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को सतना जिले के सिंहपुर में मातृ शक्ति उत्सव कार्यक्रम में 93 लाख से अधिक के कार्यों का लोकार्पण और भूमि पूजन किया। सिंहपुर में मातृ शक्ति उत्सव कार्यक्रम में लाडली लक्ष्मी बेटियों को सावन का झूला झुलाया। नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने शनिवार को सतना जिले के सिंहपुर में मातृ शक्ति उत्सव कार्यक्रम में स्नेह पूर्वक राखी बांधी। मुख्यमंत्री ने मातृ शक्ति उत्सव कार्यक्रम के दौरान हितलाभ वितरित किया।

हमारी संस्कृति में देश के लिए मातृत्व भाव विद्यमान है, हम सब भारत माता पर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए सदैव तत्पर हैं। आज का मातृशक्ति सम्मेलन- माताओं-बहनों के प्रति सनातन संस्कृति के अनुरूप अनन्य श्रद्धा-स्नेह-प्रेम और सम्मान का प्रकटीकरण है। भारत की कुटुम्ब या परिवार परम्परा हमारी संस्कृति को समृद्ध और सशक्त बनाती है।

प्रदेश की सभी बहनें हमारा मान हैं, अभिमान हैं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली बहना योजना के अंतर्गत बहनों को जारी की जाने वाली राशि में चरणबद्ध रूप से वृद्धि होगी और वर्ष 2028 तक बहनों को तीन हजार रूपए प्रतिमाह उपलब्ध कराए जाएंगे। योजना के अंतर्गत महिला सशक्तिकरण और उनके कल्याण के लिए 1500 करोड़ रूपए से अधिक प्रतिमाह अंतरित किए जा रहे हैं। प्रदेश की सभी बहनें हमारा मान हैं, अभिमान हैं। इनके मान-सम्मान और कल्याण के लिए हम कोई कसर नहीं रखेंगे। दीपावली के बाद आने वाली भाईदूज तक राज्य सरकार सभी लाड़ली बहनों को 1250 रुपए से बढ़ाकर हर माह 1500 रूपए सहायता राशि देगी। बहन-बेटियों के सशक्तिकरण के?लिए स्व-सहायता समूहों का संचालन, नौकरियों और स्थानीय व नगरीय निकायों और पंचायतों में आरक्षण उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री मोदी लोकसभा और विधानसभा में बहनों का 33 प्रतिशत आरक्षण देने के लिए प्रतिबद्ध है। माताओं-बहनों के कल्याण के लिए ही सभी परिवारों को पक्के मकान, घर-घर गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

बिजली में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सोलर पम्प पर अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसानों की जिन्दगी बदलने के लिए उन्हें बिजली में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से सोलर पम्प पर अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है। अगले डेढ़ माह में बरगी नहर का कार्य पूर्ण हो रहा है, इससे रीवा-सतना क्षेत्र में पेयजल और सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध होगा। हमारी सरकार ने हर खेत तक पानी पहुंचाने का संकल्प लिया है और हम इसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है।

वर्ष 2002-03 तक केवल 7 लाख हेक्टेयर में सिंचाई सुविध उपलब्ध थी। वर्तमान में हम 55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में वर्ष 2028 तक 100 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराने का लक्ष्य है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में इस वर्ष 2600 रूपए प्रति क्विंटल की दर से गेहूं का उपार्जन किया गया। अगले दो साल में संभवत~2700 रूपए प्रति क्विंटल की दर से गेहूं का उपार्जन किया जाएगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी के माध्यम से शीघ्र ही गरीबों के लिए 4 करोड़ आवास स्वीकृत होने वाले हैं, वर्ष 2028 तक 80 करोड़ लोगों को निःशुल्क राशन की व्यवस्था है।

सुप्रभात

कभी-कभी मेरी आँखों में
पानी अवश्य उतर आता है
लेकिन वो अश्रु पराजय के नहीं
संवेदना के होते हैं
मैं कमजोर नहीं हूँ
चुप हूँ
परंतु मेरी चुप्पी सहमति नहीं
मेरा धैर्य है
मेरी प्रतीक्षा है
मैं बोझ नहीं गिनती
रास्ते गिनती हूँ
जिनसे होकर मुझे
मंजिल तक पहुँचना है
मैने जिया है
संघर्षों को
जिम्मेदारियों को
अपमान को
इसलिए मेरे कंधे झुके जरूर हैं
लेकिन कमजोर नहीं हैं
मैं अकेली नहीं हूँ
क्योंकि मैं अपने भीतर
हजारों आवाजें,
हजारों यात्रायें
और करोड़ों स्त्रियों की चेतना
साथ लेकर चलती हूँ

मैं उस मोड़ से लौटी हूँ
जहाँ दुनिया चाहती थी
कि मैं थम जाऊँ
मगर मैं चलती रही
घुटनों के बल रेंगती हुई
प्रवाह के विरूद्ध बढ़ती हुई
क्योंकि मैं जानती हूँ
रूक जाना
केवल कमजोर हो जाना नही है
जीवन का अंत हो जाना है।

– डॉ. मनेन्द्र कटियार

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c

न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 27 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

राज्यपाल ने अपराजिता विधेयक ममता सरकार को वापस भेजा

हम विरोध करेंगे: टीएमसी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के गवर्नर आनंद बोस ने ममता बनर्जी सरकार द्वारा लाए गए अपराजिता बिल को राज्य सरकार को लौटा दिया है। राजभवन के सूत्रों के मुताबिक, केंद्र सरकार ने इस बिल पर गंभीर आपत्ति जताई है। केंद्र का कहना है कि यह बिल भारतीय न्याय संहिता की कई धाराओं में बदलाव करता है और इसमें दुष्कर्म जैसे अपराधों में बहुत सख्त सजा का प्रावधान है। इस बिल को 6 सितंबर 2024 को राज्यपाल ने राष्ट्रपति के पास भेजा था, हालांकि तभी

गवर्नर बोस ने बिल में कई खामियों की बात कही थी। दरअसल, 9 अगस्त 2024 को कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में ट्रेनी डॉक्टर से रेप-मर्डर के बाद राज्य सरकार पर महिला सुरक्षा को लेकर सवाल उठ रहे थे। ममता सरकार ने 3 सितंबर 2024 को पश्चिम बंगाल विधानसभा में एंटी-रेप बिल पेश किया था। इसके तहत पुलिस को रेप केस की 21 दिन में जांच पूरी करनी होगी। बंगाल सरकार ने बिल को अपराजिता वुमन एंड चाइल्ड बिल 2024 नाम दिया है। इसका मकसद वेस्ट बंगाल क्रिमिनल लॉ एंड अमेंडमेंट बिल में बदलाव कर रेप और यौन शोषण के मामलों में महिलाओं-बच्चों की सुरक्षा बढ़ाना है।

एनएसए के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट जाएगा अमृतपाल सिंह

कहा-पार्टी से जुड़ो

अमृतसर (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक और खडूर साहिब से सांसद अमृतपाल सिंह जल्द ही उन पर लगी नेशनल सिक्योरिटी एक्ट (एनएसए) को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने वाले हैं। इसके लिए उनके वकीलों की टीम असम की डिब्रूगढ़ जेल में उनसे मिलने पहुंची थी। वकील ईमान सिंह खारा ने बताया कि उन्होंने जेल में अमृतपाल से मुलाकात की और सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करने से पहले जरूरी दस्तावेजों और औपचारिकताओं को पूरा कर लिया है। अमृतपाल सिंह पर यह

तीसरी बार एनएसए लगाई गई है, जिसे अब वह कोर्ट में चुनौती देंगे। जल्द ही सुप्रीम कोर्ट में इस मामले को लेकर एप्लिकेशन दाखिल की जाएगी। अमृतपाल सिंह ने अपने वकीलों की मदद से अपने समर्थकों के लिए भी संदेश भेजा है। एडवोकेट इमान सिंह खारा ने जानकारी दी कि अमृपताल सिंह ने संदेश में सरकार की तरफ से किए जा रहे झूठे प्रचार की तरफ ध्यान ना देने की बात कही है। अमृतपाल सिंह की पार्टी अकाली दल वारिस पंजाब दे के साथ अधिक से अधिक जुड़ने का संदेश जेल से भेजा है। अमृतपाल सिंह पर तीसरी बार एनएसए लगाया गया है। अमृतपाल सिंह के साथ उसके 9 अन्य साथी दो साल साथ रहे।

आरसीबी, इवेंट कंपनी और राज्य क्रिकेट संघ है जिम्मेदार

- कुन्हा आयोग की आ गई रिपोर्ट, कर्नाटक सरकार ने किया है गठित

कहा-स्टेडियम असुरक्षित, जरूरी सुधार के बाद ही बड़ा आयोजन हो

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की विक्ट्री डे परेड पर हुई भगदड़ को लेकर कर्नाटक सरकार की ओर से बनाए गए जस्टिस जॉन माइकल कुन्हा आयोग की रिपोर्ट शुक्रवार को सामने आई। इसमें स्टेडियम को बड़े आयोजनों के लिए असुरक्षित बताया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि स्टेडियम की डिजाइन ऐसी नहीं है कि वहां बड़ी संख्या में लोग सुरक्षित तरीके से इकट्ठा हो सकें। स्टेडियम में भीड़ नियंत्रण, प्रवेश और निकासी व्यवस्था, पार्किंग और इमरजेंसी प्लान जैसी बुनियादी सुविधाओं की गंभीर कमी है। आयोग ने कहा, भविष्य में ऐसे बड़े

आयोजन सिर्फ उन स्थानों पर हों जहां अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा मानक पूरे किए जाते हों। साथ ही पुराने स्टेडियमों में जरूरी सुधार के बिना कोई बड़ा आयोजन न हो। स्टेडियम में 30 सितंबर से 2 नवंबर तक महिला वनडे वर्ल्ड कप के शुरुआती और सेमीफाइनल मैच होने थे, लेकिन अब मैच होंगे या नहीं यह तय नहीं है। आरसीबी ने अपनी राज्य स्तरीय टी 20 लीग 'महाराजा ट्रॉफी' को भी दर्शकों के बिना कराने का फैसला किया है। इसके अलावा कमेटी ने आरसीबी फ्रेंचाइजी, उनके इवेंट पार्टनर एंटरटेनमेंट और कर्नाटक राज्य क्रिकेट संघ को इस हादसे के लिए जिम्मेदार ठहराया है और अध्यक्ष रघुराम भट, पूर्व सचिव ए शंकर, पूर्व कोषाध्यक्ष ईएस जयराम, वाइस प्रेसीडेंट राजेश मेनन और केए एंटरटेनमेंट के वरिष्ठ अधिकारियों पर कार्रवाई की सिफारिश की गई है। आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की पहली खिताबी जीत के जश्न के दौरान हादसा हुआ।

ऑपरेशन सिंदूर हमारा संकल्प, संदेश और प्रतिक्रिया है

- कारगिल विजय दिवस पर आर्मी चीफ जनरल द्विवेदी की हुंकार

द्रास (एजेंसी)। कारगिल विजय दिवस के मौके पर सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने द्रास में कारगिल युद्ध स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर जनरल द्विवेदी ने कहा कि हम उन नायकों के ऋणी हैं

जिन्होंने राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान में आतंकवादी ढांचों को प्रभावी ढंग से निशाना बनाकर निर्णायक जीत हासिल की। जनरल द्विवेदी ने कहा कि सरकार द्वारा सेना को खुली छूट दिए जाने के बाद भारतीय सेना ने पहलगाम आतंकवादी हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया। उन्होंने कहा कि हमने पाकिस्तान में किसी निर्दोष को नुकसान पहुंचाए बिना नौ अहम आतंकी ठिकानों को नष्ट किया। इस मौके पर सेना प्रमुख ने कहा कि हमने हमेशा पाकिस्तान को शांति का मौका दिया। लेकिन उन्होंने हमेशा ही कायरतापूर्ण हरकतें की है। सेना प्रमुख ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर हमारा संकल्प, संदेश और प्रतिक्रिया है। हमारी वायु रक्षा ड्रोन और मिसाइलों के खिलाफ एक मजबूत दीवार है।

राजस्थान में सीएम ऑफिस-एयरपोर्ट उड़ाने की धमकी

एटीएस और बम स्क्वायड हुआ ऐक्टिव, चलाया अभियान

जयपुर (एजेंसी)। जयपुर शहर में विभिन्न स्थानों को बम से उड़ाने की धमकियां मिलने का सिलसिला थम ही नहीं रहा है। पिछले दो महीनों में दर्जन से अधिक बार बम धमाकों की धमकियां मिल चुकी हैं। अब जयपुर के मुख्यमंत्री कार्यालय को भी उड़ाने की धमकी मिली है। जैसे ही धमकी भरा ईमेल मिला, सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट हो गईं। एटीएस और बम निरोधक दस्ते की टीमें तुरंत सिविल लाइंस स्थित मुख्यमंत्री निवास पहुंचीं। साथ ही सचिवालय स्थित मुख्यमंत्री के कार्यालय में भी एटीएस और बीडीएस की टीमें पहुंची। पुलिस के उच्च अधिकारी भी मौके पर आ गए। करीब दो घंटे तक मुख्यमंत्री निवास और कार्यालय में चप्पे-चप्पे की तलाशी ली गई। तलाशी में कहीं भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली है। जयपुर के इंटरनेशनल एयरपोर्ट को भी बम से उड़ाने की धमकी मिली है। एयरपोर्ट प्रशासन की ऑफिशियल ईमेल आईडी पर

आए धमकी भरे ईमेल में लिखा है कि एक से दो घंटे में सीएम ऑफिस और एयरपोर्ट को उड़ा दिया जाएगा। जैसे ही धमकी भरे ईमेल के बारे में जानकारी मिली तो पुलिस और प्रशासन में खलबली मच गई। अधिकारी तुरंत हरकत में आए। मुख्यमंत्री निवास, मुख्यमंत्री कार्यालय और जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर सुरक्षा एजेंसियों ने तलाशी ली। पांच दिन पहले 21 जुलाई को जयपुर के विद्याधर नगर स्थित माहेश्वरी गर्ल्स स्कूल को भी बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्कूल स्टॉफ प्रशासन ने तुरंत सभी छात्र छात्राओं को स्कूल से बाहर निकाल कर सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इसके बाद परिजनों को सूचना देकर सभी बच्चों को घर के लिए रवाना किया। बम धमाकों की धमकी की सूचना के बाद पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने करीब दो घंटे तक जांच पड़ताल की।

सीजेआई गवई का सुझाव, ज्यूडीशियरी का विकेंद्रीकरण हो

- कहा-यह न्याय को घर-घर पहुंचाने के लिए है बेहद जरूरी

अमरावती (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) भूषण गवई ने शुक्रवार को जनता के घर-द्वार तक न्याय पहुंचाने के लिए न्यायपालिका के विकेंद्रीकरण का सुझाव दिया। वे अपने पैतृक जिले अमरावती के दरियापुर कस्बे में कोर्ट बिल्डिंग का उद्घाटन करने पहुंचे थे। सीजेआई गवई ने कहा कि न्यायिक अवसंरचना समिति के प्रमुख के रूप में उन्होंने नए तालुका और जिला न्यायालयों की स्थापना का एक मॉडल तैयार किया है। उनके प्रस्ताव पर काम हो रहा है, लेकिन अदालतों और सरकार में लालफीताशाही एक जैसी है। हालांकि उन्होंने बताया

कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, एकनाथ शिंदे, उद्धव ठाकरे न्यायिक अवसंरचना कार्यों के प्रति सकारात्मक रहे हैं। आज भी पर्याप्त फंड दिया जा रहा है। सीजेआई ने कहा कि वह दरियापुर में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के रूप में नहीं, बल्कि निवासी के रूप में आए हैं। उन्होंने कहा- दरियापुर कोर्ट यह सुनिश्चित करेगा कि न्याय समाज का सबसे आखिरी व्यक्ति तक पहुंचे। श्री गवई ने नए लॉ ग्रेजुएट्स को सलाह दी कि वे वकीलों से जुड़े पद और प्रतिष्ठा को अपने दिमाग पर हावी न होने दें।

मप्र में कुपोषण को लेकर हाईकोर्ट में याचिका

सभी जिलों के कलेक्टर को रिपोर्ट पेश करने के निर्देश, बताना होगा कुपोषण की स्थिति

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश में कुपोषण को लेकर एक जनहित याचिका दायर की गई, जिस पर शुक्रवार को मुख्य न्यायाधीश संजीव सचदेवा एवं न्यायमूर्ति विनय सराफ की खंडपीठ ने सुनवाई की। हाईकोर्ट ने सभी जिलों के कलेक्टरों को आदेश दिया है कि वे अपने-अपने जिलों में कुपोषण की स्थिति की रिपोर्ट 4 हफ्ते के भीतर कोर्ट में पेश करें। कोर्ट ने इस मामले में राज्य सरकार और मुख्य सचिव से भी जवाब मांगा है। जबलपुर के दीपांकर सिंह ने हाईकोर्ट में यह जनहित याचिका दायर की थी।

याचिकाकर्ता की दलील- कुपोषण की सच्चाई छुपाई जा रही है- दीपांकर सिंह की तरफ से उनके वकीलों ने कोर्ट को बताया कि सरकार और प्रशासन सिर्फ आंकड़ों का खेल खेल रहे हैं। असली स्थिति बहुत ही खराब है, लेकिन उसे छुपाया जा रहा है। बच्चे कमजोर हो रहे हैं, लेकिन सरकार सिर्फ रिपोर्टों में अच्छी तस्वीर दिखा रही है।

सरकारी योजनाओं में लापरवाही और भ्रष्टाचार- याचिका में बताया गया कि सरकारी पोषण योजनाओं में प्रोटीन और विटामिन की कमी है, जिससे बच्चे कमजोर, ठिगने और बीमार हो रहे हैं। पोषण ट्रैकर 2.0 और हेल्थ सर्वे के मुताबिक, 2025 में कुपोषित बच्चों की संख्या में 3त्न की बढ़त हुई है।

इसके अलावा, बच्चों और महिलाओं के लिए जो पोषण आहार भेजा जाता है, उसके वितरण और ट्रांसपोर्ट में भी बड़ी गड़बड़ियां हो रही हैं। कैग की रिपोर्ट में बताया गया कि पोषण आहार के नाम पर साल 2025 में 858 करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है, लेकिन जिम्मेदारों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

10 लाख बच्चे कुपोषण के शिकार, 57त्न महिलाएं एनीमिया से पीड़ित- मध्यप्रदेश में 66 लाख छोटे बच्चे (0-6 साल के) हैं, जिनमें से 10 लाख से ज्यादा कुपोषित हैं। इनमें 1.36 लाख बच्चे गंभीर रूप से कमजोर हैं। वहीं, महिलाओं में खून की कमी (एनीमिया) की दर 57 प्रतिशत है, जो बहुत ज्यादा है। याचिका में यह भी बताया गया कि जबलपुर में आंगनबाड़ी केंद्रों के किराए के नाम पर 1.80 करोड़ रुपये खर्च कर दिए गए, जबकि वहां बच्चों की उपस्थिति बहुत कम है। एक आंगनबाड़ी केंद्र में 40-50 बच्चों का रजिस्ट्रेशन होता है, लेकिन आते सिर्फ कुछ ही हैं।

- अग्निवीरों के लिए योगी सरकार का बड़ा फैसला

यूपी पुलिस में 20 प्रतिशत आरक्षण का कर दिया ऐलान

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार ने अग्निपथ योजना के तहत देश की सेनाओं में सेवा देने वाले अग्निवीरों के लिए बड़ा फैसला लिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ऐलान किया है कि रिटायरमेंट के बाद अग्निवीरों को उत्तर प्रदेश पुलिस बल में 20 प्रतिशत आरक्षण दिया जाएगा। यह निर्णय न सिर्फ युवाओं को सेना में सेवा के लिए प्रेरित करेगा, बल्कि उनके भविष्य को भी सुरक्षित बनाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने

कहा कि जो जवान अग्निवीर योजना के अंतर्गत देश की रक्षा में योगदान दे रहे हैं, जब वे सेवा समाप्त कर लौटेंगे, तो उन्हें यूपी पुलिस में भर्ती में प्राथमिकता दी जाएगी। इसके लिए 20 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था की जा रही है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने ये भी बताया कि अगर कोई जवान देश की सीमाओं की सुरक्षा करते हुए शहीद होता है, तो सरकार उनके परिवार को 50 लाख रुपये की सहायता राशि और परिवार के एक सदस्य को नौकरी देगी।

शिक्षण संस्थानों में काउंसलर नियुक्त करें, कानूनी कार्रवाई होगी: एससी

- कैंपस में स्टूडेंट्स के आत्महत्या मामलों पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, जारी की 15 गाइडलाइंस

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनिवर्सिटी कैंपस और शिक्षण संस्थानों से लगातार आ रही स्टूडेंट्स के द्वारा आत्महत्या करने की खबरों पर सुप्रीम कोर्ट ने चिंता जताई है। कोर्ट ने इस मामले में अखिल भारतीय स्तर पर गाइडलांइस जारी की हैं। मतलब कि यह गाइडलांइस पूरे देश में लागू होंगी। अदालत ने नाराजगी जताते हुए कहा कि भारत में एजुकेशनल इंस्टीट्यूट या कोचिंग सेंटर में स्टूडेंट्स की आत्महत्या को रोकने के लिए देश में कोई कानून नहीं है। अदालत ने कहा कि उसकी ओर से जारी की गई 15 बिंदुओं वाली गाइडलाइंस तब तक जारी रहेगी जब तक इसे लेकर कोई सक्षम प्राधिकरण का गठन नहीं किया जाता। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने कहा कि देश के सभी शिक्षण संस्थानों को निर्देश दिया जाता

है कि उन्हें यूनिफॉर्म मेंटल हेल्थ पॉलिसी बनाने होगी। इस पॉलिसी को बनाने में उम्मीद ड्राफ्ट, मनोदर्पण से मदद ली जा सकती है। उन्होंने कहा इस पॉलिसी को हर साल पर रिव्यू किया जाए और इसे अपडेट किया जाए। इसे शैक्षणिक संस्थाओं के नोटिस बोर्ड पर भी लगाए जाना चाहिए। अदालत ने कहा कि ये गाइडलाइंस सभी शैक्षणिक संस्थानों- पब्लिक और प्राइवेट स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, ट्रेनिंग सेंटर, कोचिंग इंस्टीट्यूट, हॉस्टल पर लागू होंगी। अदालत ने कहा कि ऐसे शिक्षण संस्थान शामिल हैं जहां ज्यादा छात्र हैं।

राफेल लड़ाकू विमानों की संख्या घटाने की तैयारी में भारत

- फ्रांस को झटका, नई खरीद नीति में बड़े बदलाव के आसार

पेरिस/नई दिल्ली (एजेंसी)। वायुसेना की जरूरतों को देखते हुए भारत अपने एमआरएफए (मल्टी रोल फाइटर एयरक्राफ्ट) प्रोग्राम में बड़ा बदलाव कर सकता है। इस प्रोग्राम के तहत भारत ने 114 एडवांस लड़ाकू विमानों को खरीदने की योजना बनाई थी। लेकिन अब जबकि चीन के पास दो तरह के पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमान हैं और पाकिस्तान, चीन से एफ-35 खरीदने वाला है, तो भारत अपनी स्ट्रैटजी में गंभीरता से बदलाव करने की सोच रहा है।

भारत ने पहले एमआरएफए प्रोग्राम के लिए टेंडर निकालने का फैसला किया था। लेकिन अब भारत की रणनीति में बड़े बदलाव के संकेत मिल रहे हैं। ताजा रिपोर्ट्स के मुताबिक भारतीय रक्षा मंत्रालय अब टेंडर निकालने की जगह सरकार से सरकार स्तर पर लड़ाकू विमानों को खरीदने के लिए समझौता करने पर विचार कर रहा है। इस बदलाव का मकसद भारतीय वायुसेना की तात्कालिक जरूरतों को पूरा करते हुए भविष्य के लिए भी एक मजबूत रोडमैप तैयार करना है। रिपोर्ट के मुताबिक इस प्रोग्राम के तहत पहले जो 114 लड़ाकू विमान खरीदे जाने वाले थे।

राजस्थान स्कूल हादसा

गांवों में मातम, हर आंख में दिखे आंसू

- झालावाड़ जिले में 7 बच्चों का हुआ अंतिम संस्कार
- वसुंधरा ने पीड़ित परिवार को चेक-जॉइनिंग लेटर सौंपा

झालावाड़ (एजेंसी)। राजस्थान के झालावाड़ में सरकारी स्कूल की बिल्डिंग के नीचे दबकर जान गंवाने वाले सातों बच्चों के परिवार वालों को 10 लाख रुपए और संविदा पर नौकरी मिलेगी। साथ ही, नए स्कूल भवनों में बनने वाले क्लास रूम (कक्षा कक्ष) का नाम मृतक बच्चों के नाम पर रखा जाएगा। पीड़ित परिवारों से मिलने पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे पिपलोदी पहुंची। उनकी गोद में सिर रखकर परिवार वाले फूट-फूट कर रोए। इस दौरान

उन्होंने चेक और संविदा पर नौकरी का जॉइनिंग लेटर सौंपा। 25 जुलाई को मनोहरथाना ब्लॉक के पिपलोदी सरकारी स्कूल की बिल्डिंग का हिस्सा गिर गया था। इस हादसे में 7 बच्चों की जान चली गई थी, 21 बच्चे घायल हुए थे। इसमें से 9 की हालत गंभीर है। शनिवार सुबह 6 बच्चों का शव पिपलोदी और एक बच्चे का शव चांदपुर भीलन पहुंचा दिया गया था। भाई-बहन (कान्हा और मीना) का शव एक ही अर्थी पर ले जाया गया। सभी बच्चों का अंतिम संस्कार कर दिया गया है। दूसरी ओर, नरेश मीणा को रिहा करने की मांग की।

इंदौर में राहत की बारिश का लंबा दौर कई इलाकों में जाम, मौसम में ठंडक

इंदौर। शुक्रवार को दिनभर गर्मी और उमस से परेशान शहरवासियों को शाम होते-होते राहत मिली। शाम 6 से अचानक मौसम बदला और तेज बारिश शुरू हो गई। करीब आधे घंटे तक झमाझम बारिश हुई, इसके बाद देर रात तक रिमझिम फुहारें चलती रहीं जो शनिवार को भी जारी है। इससे मौसम में ठंडक घुल गई।

मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक इंदौर में शनिवार और रविवार को भारी बारिश होने की संभावना बताई गई है। इस बार सप्ताह के अंत में इंदौर वर्षा से तरबतर होगा। शाम को अचानक बादल छाए और झमाझम बारिश ने शहर तरबतर किया। बंगाली, पलासिया, मूसाखेड़ी व भंवरकुआं क्षेत्र में तेज बौछारों से सड़कों पर जलजमाव हुआ। वहीं रात 11 बजे तक शहर में कहीं तेज तो कहीं रिमझिम पानी गिरा। शुक्रवार को पश्चिमी हिस्से के मुकाबले पूर्वी हिस्से में बारिश ज्यादा मेहरबान रही। इस बार सप्ताह के अंत में इंदौरवासी वर्षा से तरबतर होंगे। जुलाई में पहली बार शहर में झमाझम बरसात का नजारा देखने को मिला। इंदौर में सावन के महीने में पहली बार शुक्रवार शाम से देर रात तक बारिश की झड़ी लगी रही।

इस कारण कई चौराहों पर जलजमाव और सिग्नल खराब हो गए। कई चौराहों पर घुटनों तक पानी भरने से दो एवं चार पहिया वाहन बंद हो गए। इससे वाहनों की कतार लग गई। करीब तीन से चार घंटे तक प्रमुख चौराहों पर जाम में वाहन चालक फंसे रहे। यातायात सुधारने के प्रयास भी काम नहीं आए। जंजीरवाला, एलआईजी, पलासिया, गिटारवाला, घंटाघर, हाई कोर्ट, गीता भवन, आई टी पार्क, तीन इमली, भंवरकुआं चौराहों पर ज्यादा जाम लगा। पलासिया से घंटाघर, घंटाघर से गीता भवन और गीता भवन से पलासिया की ओर वाहन फंसे रहे। रीगल से पलासिया, पलासिया से गीता भवन, भंवरकुआं से नौलखा, नौलखा से तीन इमली तक जाम रहा। जुलाई में अब तक इंदौर में मानसून की रफ्तार सुस्त रही है। 25 दिन बीतने के बावजूद महज 2 इंच बारिश हुई, जबकि सामान्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए 8 इंच और बारिश की जरूरत है। शुक्रवार को 6 घंटे में सवा 2 इंच बारिश दर्ज की गई। जबकि, पूरे मानसून सीजन में अब तक कुल साढ़े 7 इंच से अधिक बारिश दर्ज की गई। शुक्रवार को दिन का अधिकतम तापमान 31 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 3 डिग्री अधिक रहा। वहीं, गुरुवार को दिन का तापमान गिरकर 26.4 डिग्री पर आ गया था। रात का तापमान शुक्रवार को 23.6 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 1 डिग्री अधिक है।

शहर के कई इलाकों में पानी भरा

एमजी रोड पर इंद्रप्रस्थ टॉवर, विजयनगर से पलासिया तक, कनाडिया रोड, राजवाड़ा, मालगंज और अन्य कई व्यस्त इलाकों में ट्रैफिक रुक-रुक कर चला या जाम लगा। ट्रैफिक का लोड ज्यादा और निर्माण कार्य के कारण जाम की स्थिति गंभीर हो गई। सड़कों पर पानी भरा होने से दोपहिया वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

इंदौर की सफाई व्यवस्था पर फिदा हुआ केरल

इंदौर। भारत की स्वच्छता राजधानी इंदौर के सफाई मॉडल ने एक बार फिर देशभर का ध्यान खींचा है। केरल राज्य के स्थानीय प्रशासन एवं अपशिष्ट प्रबंधन मंत्री एम.बी. राजेश अपने अधिकारियों संग इंदौर पहुंचे और स्वच्छता मॉडल की सराहना करते हुए इसे देश के लिए रोल मॉडल बताया। महापौर पुष्यमित्र भार्गव से मुलाकात में उन्होंने इंदौर की व्यवस्था को कोच्चि में अपनाने की बात कही और इंदौर प्रतिनिधिमंडल को केरल आने का निमंत्रण भी दिया। महापौर ने कहा कि इंदौर की पारदर्शी व्यवस्था देश के किसी भी हिस्से में अपनाई जा सकती है। अब तक 1,600 से अधिक प्रतिनिधिमंडल इंदौर की सफाई व्यवस्था का अध्ययन कर चुके हैं।

लापरवाही पर ठेकेदार का अनुबंध निरस्त

इंदौर। नगर निगम जल यंत्रालय एवं ड्रेनेज विभाग द्वारा जोन क्रमांक 12 के अंतर्गत सिटीजन शौचालय को तोड़कर नए सामुदायिक शौचालय का निर्माण कार्य ठेकेदार राधेश्याम कंसोदिया को सौंपा गया था।कार्यादेश के अनुसार 6 माह में कार्य पूर्ण करना था,किंतु 38 माह बीत जाने के बाद भी कार्य अधूरा है। इस लापरवाही के कारण क्षेत्र के 32 हजार नागरिकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।निगम आयुक्त के निर्देश पर ठेकेदार का अनुबंध तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिया गया है। साथ ही ठेकेदार से 7 दिन में स्पष्टीकरण मांगा गया है कि उसे आगामी 3 वर्षों तक नगर निगम के कार्यों से प्रतिबंधित क्यों न किया जाए। विभाग ने ठेकेदार की परफॉर्मेंस सिक्योरिटी राशि राजसात करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है।

काम में देरी और घटिया क्वालिटी पर नाराज़गी

इंदौर। वार्ड 61 में चल रहे सड़क निर्माण कार्य में लापरवाही और अनियमितता को लेकर शुक्रवार को महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माण की धीमी रफ्तार और घटिया गुणवत्ता पर नाराज़गी जाहिर करते हुए ठेकेदार को टर्मिनेट करने और ब्लैकलिस्ट करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के समय स्थानीय विधायक गोलू शुक्ला,पार्षद भावना सुंदरलाल चौधरी, अधीक्षण यंत्री डी.आर. लोधी सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित थे। महापौर ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि जिस सड़क को गाड़ी अड्डा से जोड़ना था,वह अब तक अधूरी है–यह अधिकारियों और ठेकेदार की लापरवाही का परिणाम है। महापौर ने निगम अधिकारियों को चेताया कि इस तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने निर्देश दिए कि अधूरी सड़क का कार्य 15 दिनों में हर हाल में नए ठेकेदार द्वारा पूरा कराया जाए। महापौर भार्गव ने कहा कि अब निगम कार्यों में अनुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी। समय सीमा और गुणवत्ता का पालन न करने वाले ठेकेदारों को भविष्य में सीधे टर्मिनेट किया जाएगा। जनता के धन और धैर्य से कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता।

सहायक राजस्व निरीक्षक को निलंबित किया

इंदौर। नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा ने जोन क्रमांक 17,वार्ड 19 में पदस्थ सहायक राजस्व निरीक्षक राहुल कुलकर्णी को कार्य में लापरवाही और संपत्ति करदाताओं से अभद्र व्यवहार करने के आरोप में तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। आयुक्त को मिली शिकायतों के अनुसार कुलकर्णी राजस्व वसूली कार्य में रुचि नहीं ले रहे थे और वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों की अनदेखी कर रहे थे। इसके साथ ही वे अनुशासनहीनता बरतते हुए मनमाने ढंग से कार्य कर रहे थे। इस पर सख्त कार्रवाई करते हुए आयुक्त वर्मा ने उन्हें ट्रेंचिंग ग्राउंड में अटैच किया है और उनके खिलाफ विभागीय जांच के आदेश भी जारी किए हैं। निगम प्रशासन ने स्पष्ट संकेत दिया है कि लापरवाही व दुर्व्यवहार कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

दुष्कर्म पीड़िता को लव जिहाद से जुड़े आरोपियों ने धमकी दी

पुलिस ने ब्लैकमेल और धमकाने का मामला दर्ज किया

इंदौर। तुकोगंज पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। इन पर दुष्कर्म और लव जिहाद की पीड़िता ने ब्लैकमेलिंग और धमकाने का आरोप लगाया।आरोपियों ने जमानत के लिए पीड़िता को धमकाया और फोटो व वीडियो वायरल करने की धमकी देकर राजीनामें पर हस्ताक्षर करवा लिए। कनाड़िया रोड़ की 20 वर्षीय पीड़िता ने 12 जून को युसूफ खान के विरुद्ध कनाड़िया थाना में दुष्कर्म और मप्र धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज करवाया था। मुकेश के नाम से दोस्ती कर युसूफ ने पीड़िता से संबंध बनाए थे। बाद में उसने पीड़िता को मुसलमान बनने के लिए धमकाया। युसूफ इस मामले में अभी तक जेल में ही बंद है। दुष्कर्म पीड़िता का आरोप है कि 21 जुलाई को युसूफ का दोस्त रवि भाट घर आया और कहा बातचीत करनी है। चाय का बोलकर वह बाइक से हाईकोर्ट लेकर आ गया। यहां युसूफ के दोस्त शिवम वर्मा, शिवाय और मुबारिक भी मिलें। आरोपियों ने कहा कि युसूफ को जेल से बाहर निकालना है। उसके लिए तुमको हस्ताक्षर करने होंगे। आरोपी रवि ने कहा वह भाजपा नेताओं का करीबी है।

चार के खिलाफ मामला दर्ज– आरोपियों ने उसके अश्लील फोटो और वीडियो वायरल करने की धमकी। पीड़िता पर दबाव बनाया और दस्तावेजों पर साइन करवा लिए। गुरुवार रात पीड़िता ने हिंदू संगठन के कार्यकर्ता मानसिंह राजावत, लक्की, कुलदीप को घटना बताई और तुकोगंज थाने में चारों के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई।

इंदौर बना वेटलैंड सिटी, रामसर साइट्स पर इंदौर को मिला दर्जा

वैश्विक मान्यता से इतिहास रचा, जिम्बाब्वे में सम्मानित

इंदौर। स्वच्छता और स्मार्ट सिटी की तरह अब इंदौर ने एक और गौरवशाली उपलब्धि हासिल की। इंदौर को वैश्विक स्तर पर 'वेटलैंड सिटी' के रूप में मान्यता मिली है। यह दर्जा दुनिया की प्रतिष्ठित रामसर साइट सूची के आधार पर दिया गया है। शुक्रवार को और इसका पुरस्कार जिम्बाब्वे के विक्टोरिया हॉल में आयोजित समारोह में डॉ मोसिंदा मुंबा (जनरल सेक्रेटरी, कन्वेंशन ऑन वेटलैंड्स) ने इंदौर को प्रदान किया गया।यह अवार्ड डॉ सुजीत कुमार बाजपेयी (पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के जॉइंट सेक्रेटरी) ने ग्रहण किया। इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने इस उपलब्धि को शहरवासियों से साझा करते हुए हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुझे यह बताते हुए गर्व है कि भारत के दो ही शहरों को यह गौरव प्राप्त हुआ है और इंदौर उनमें से एक है। यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि संयुक्त राष्ट्र के रिकॉर्ड में भी अब इंदौर 'वेटलैंड सिटी' के रूप में दर्ज हो गया है। महापौर ने कहा कि यह मान्यता सिरपुर और यशवंत सागर जैसे रामसर प्रमाणित वेटलैंड्स के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में इंदौर द्वारा किए गए प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने सभी इंदौर वासियों को बधाई देते हुए आह्वान किया कि हम सभी मिलकर अपने इन प्राकृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए सतत प्रयास करते रहें और इंदौर को पर्यावरण के क्षेत्र में भी अग्रणी बनाए रखें। यह उपलब्धि इंदौर को सिर्फ भारत में, बल्कि वैश्विक मंच पर पर्यावरणीय जागरूकता और संरक्षण की मिसाल के रूप में स्थापित करती है।

जहां राजा की हत्या हुई, उसी जगह आत्मा की शांति के लिए पूजा-पाठ

इंदौर। शादी के सप्ताह भर बाद पत्नी के साथ हनीमून मनाने मेघालय के शिलांग गए ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की हत्या उसकी पत्नी सोनम ने अपने प्रेमी और किराए के हत्यारों के साथ मिलकर करवा दी थी। बाद में लंबे घटनाक्रम के बाद यह साजिश सामने आई और शिलांग पुलिस ने इंदौर आकर सभी आरोपियों को गिरफ्तार किया। सोनम भी उत्तर प्रदेश में पकड़ ली गई। मेघालय में शिलांग के नजदीक जहां राजा रघुवंशी की हत्या की गई थी, परिवार ने वहां पहुंचकर उसकी आत्मा की शांति के लिए पूजन किया। राजा के भाई विपिन रघुवंशी वहां पहुंचे हुए हैं। बुधवार को चेरापूंजी के सोहरा के करीब वेई सैडॉन्ग वाटरफॉल्स में घटनास्थल पर वे पहुंचे और यहां भाई की आत्मा की शांति के लिए सारे संस्कार किए। पत्नी सोनम रघुवंशी के साथ हनीमून के लिए शिलांग गए राजा रघुवंशी की लाश 2 जून को यहीं मिली थी। हत्या के आरोप में सोनम रघुवंशी और उसका प्रेमी राज कुशवाह और हत्या की वारदात को अंजाम देने वाले उसके तीन साथी शिलांग की जेल में बंद हैं। परिवार ने राजा की आत्मा की शांति के साथ उसे जल्द न्याय मिलने की भी प्रार्थना भी की। इस पूरे कांड का सबसे नाटकीय घटनाक्रम ये रहा कि मामले के 8 आरोपियों में से 3 को जमानत दे दी गई। इन पर सोनम को हत्या के बाद इंदौर आने पर छुपाने और उसका सामान गायब करने का आरोप है।

चेरापूंजी के सोहरा के करीब वाटरफॉल्स के पास कर्मकांड

जमानत कैंसिल कराने की अपील करेंगे

शिलांग पहुंचे विपिन रघुवंशी इससे दुखी हैं कि उनकी भाई की हत्या में सबूत मिटाने के आरोपियों प्रॉपर्टी डीलर सिलोम जेम्स, सिक्युरिटी गार्ड बलवीर और जिस बिल्डिंग में सोनम ठहरी थी उसके मालिक लोकेंद्र तोमर को जमानत मिल गई। विपिन का कहना है कि वे इन तीनों की जमानत कैंसिल कराने के लिए वकील के जरिए कोर्ट में अपील करेंगे। साथ ही एक बार फिर राजा रघुवंशी के परिवार ने सोनम रघुवंशी के नार्को टेस्ट की मांग की गई। उनका मानना है कि हत्या के पीछे की सही वजह अब तक सामने नहीं आई है। आखिर क्यों सोनम रघुवंशी ने अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या करवाई। उन्होंने आरोप लगाया कि अब सोनम का भाई गोविंद रघुवंशी बहन को जमानत दिलाने की कोशिश में लगा है।

यह है हनीमून मर्डर कांड – राजा रघुवंशी और सोनम रघुवंशी की 11 मई को शादी हुई थी। इसके बाद वे हनीमून मनाने के लिए 20 मई को मेघालय के शिलांग पहुंचे थे। यहां 23 मई के बाद से उनसे कोई संपर्क नहीं हो पाया था। इस दौरान 2 जून को राजा की लाश खाई में मिली। उसके शरीर पर धारदार हथियार से वार के निशान थे। इससे साफ हो गया था कि राजा की हत्या की गई है। इसके बाद सोनम की तलाश शुरू हुई।

दो सिर वाली बच्ची के दो हार्ट भी, चौंकाने वाली बात सामने

एक हार्ट पर प्रेशर ज्यादा, बचने की संभावना कम

इंदौर। एक महिला ने दो सिर वाली बच्ची को जन्म दिया। अब डॉक्टरों ने एक और चौंकाने वाली बात बताई है। डॉक्टरों का कहना है कि ऐसे बच्चों को बचाना मुश्किल होता है। जन्म देने वाली महिला की उम्र 22 साल है। इस बच्ची को बचाने के लिए डॉक्टर दिन-रात मेहनत कर रहे हैं। वे अपनी हर संभव कोशिश कर रहे हैं। अब एक डॉक्टर ने बताया है कि इस बच्ची के दो हार्ट भी हैं। देवास जिले की एक महिला ने इंदौर के शासकीय महाराजा तुकोजीराव अस्पताल में मंगलवार को सिजेरियन ऑपरेशन के जरिये ऐसे बच्ची को जन्म दिया जिसके एक ही धड़ से दो सिर जुड़े हैं।

बच्ची का वजन 2.80 किलो है। इस एनआईसीयू में भर्ती किया गया है। एमटीएच के डॉ नीलेश जैन ने बताया कि बच्ची का वजन तो ठीक है। लेकिन, बच्ची के शरीर में दो हार्ट हैं जिनमें से एक हार्ट बहुत छोटा है। जबकि, दूसरे हार्ट में अपेक्षाकृत ज्यादा विकृतियां हैं। एक हार्ट को दो ब्रेन को ब्लड सप्लाई करना पड़ रहा है जिसकी वजह से उस पर लोड ज्यादा है। ऐसे में बच्ची का बचना मुश्किल है। उन्होंने बताया कि बच्ची को सांस लेने में भारी दिक्कत और अन्य गंभीर समस्याएं हो रही हैं। उसे वेंटिलेटर पर रखा गया है। डॉक्टर ने बताया कि ऐसे मामलों में बच्ची के ज्यादा दिन तक जीवित रहने की संभावनाएं काफी कम होती हैं, सर्जरी संभव नहीं हो पाती। एक ही धड़ से जुड़े दो सिरों की विकृति एक से दो लाख जन्मों में किसी एक बच्ची में पाई जाती है।

फरार कांग्रेस पार्षद गिरफ्तार नहीं हुआ तो उसकी संपत्ति की कुर्की

कादरी के खिलाफ पुलिस थानों में 18 प्रकरण दर्ज मिले

इंदौर। लव जिहाद के लिए फंडिंग करने वाले फरार कांग्रेस नेता और पार्षद पर पुलिस ने शिकंजा कसने के लिए एक और बड़ी घोषणा की।

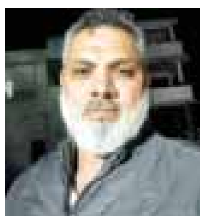

महीने भर से फरार कांग्रेस पार्षद की गिरफ्तारी पर जो 10 हजार का इनाम घोषित था, उसे अब बढ़ाकर 20 हजार कर दिया गया। एडीसीपी क्राइम राजेश दंडोतिया ने मीडिया को बताया कि लव जिहाद के फंडिंग मामले में स्थानीय कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी उर्फ डकैत की गिरफ्तारी पर पुलिस के एक उपायुक्त ने 10 हजार रुपए का इनाम घोषित किया था। इनाम की इस रकम को पुलिस के एक अतिरिक्त आयुक्त ने बढ़ाकर 20 हजार कर दिया। दंडोतिया ने बताया कि अगर अगले कुछ दिनों में कांग्रेस पार्षद गिरफ्तार नहीं होता है तो उसकी संपत्तियां कुर्क करने की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस ने कुछ दिनों पहले लव जिहाद करने वाले दो मुस्लिम युवकों साहिल शेख और अल्ताफ शाह को पकड़ा था। पूछताछ में दोनों ने बताया था कि कांग्रेस पार्षद अनवर कादरी इसके लिए फंडिंग करता था। ये युवक हिंदू लड़कियों को प्रेम जाल फंसा कर उनका धर्मांतरण करवाते थे। इन सबके लिए कादरी ने तीन लाख रुपए दिए थे।

'नशे से दूरी है ज़रूरी' अभियान ने इंदौर पुलिस का मानव श्रृंखला का वर्ल्ड रिकार्ड

7100 लोगों ने भंवरकुआं से पलासिया चौराहे तक मानव श्रृंखला बनाई

इंदौर। नशे की बढती प्रवृत्ति व इसके दुष्प्रभावों के प्रति जनचेतना लाने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश के पुलिस द्वारा प्रदेशव्यापी अभियान 'नशे से दूरी है ज़रूरी' चलाया जा रहा है। इस अभियान के तहत लोगों को नशे के दुष्परिणामों के प्रति सचेत कर, नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करने के लिये विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इस कड़ी में आज 25 जुलाई को इंदौर पुलिस को एक बड़ी उपलब्धि हासिल हुई। विभिन्न स्कूल/कॉलेज कोचिंग संस्थान के स्टूडेंट्स, नगर सुरक्षा समिति सदस्यों, ट्रैफिक वार्डन के महिलाओं, पुरुषों सहित 7100 लोगों ने एक साथ नशे के विरूद्ध जागरूकता के लिए मानव श्रृंखला बनाकर इंदौर का नाम वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज हो गया। इस मानव श्रृंखला को भंवरकुआ चौराहे से पलासिया चौराहे तक

बनाई गई। इसकी शुरुआत अति पुलिस आयुक्त अमित सिंह एवं पुलिस उपायुक्त जोन-04 ऋषिकेश मीणा द्वारा की गई। जिसमें इंदौर शहर सहोदय ग्रुप से जुड़े प्रमुख स्कूल/कॉलेज स्कूल व अन्य स्कूल तथा प्रमुख कोचिंग संस्थानों के छात्र-छात्राएं व स्टाफ, नगर सुरक्षा समिति के सदस्य, ट्रैफिक वार्डन सहित बच्चों युवाओं एवं महिलाओं एवं बुजुर्गों ने भाग लेकर इस अभियान के तहत भंवरकुआं से नवलखा, जीपीओ, गीता भवन से पलासिया चौराहे तक नशे के विरुद्ध जागरुकता संदेशो की तख्तियों पम्पलेट्स आदि के जरिये लोगो को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया। नशे से दूर रहने का संदेश दिया। इस मानव श्रृंखला का समापन पलासिया चौराहे पर अति पुलिस आयुक्त मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं अन्य पुलिस अधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। इस दौरान नशे के विरुद्ध जागरूकता के लिए 7100 लोगों की मानव श्रृंखला बनाई गई, जो इस प्रकार बनाई गई श्रृंखला का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड है। जिस पर वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड लंदन के भरत शर्मा व टीम द्वारा नगरीय पुलिस इंदौर को वर्ल्ड रिकार्ड का प्रोविजनल सर्टिफिकेट पुलिस आयुक्त नगरीय इंदौर संतोष कुमार सिंह को प्रदान किया। उक्त रिकॉर्ड प्राप्त होने पर पुलिस आयुक्त द्वारा इस अभियान में शामिल सभी स्टूडेंट्स, नागरिक व पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी एवं सभी प्रतिभागियों को पुलिस कमिश्नरेट इंदौर की और से प्रशस्ति पत्र भी प्रदाय किए गए।

पंचायत सचिवों ने रैली निकाली मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

घोषणाओं के अमल न होने से सचिवों में रोष व्याप्त

इंदौर। मध्यप्रदेश पंचायत सचिव संगठन, जिला इंदौर द्वारा शुक्रवार को एक दिवसीय सामूहिक अवकाश लेकर रैली निकाली गई। रैली जिला पंचायत कार्यालय से शुरू होकर कलेक्टर कार्यालय पहुंची,जहां मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इस रैली में सांवेर,महू,देपालपुर व इंदौर के सभी सचिव शामिल हुए। रैली का आयोजन प्रांतीय संयुक्त मोर्चे के आह्वान पर किया गया था। संभाग उपाध्यक्ष नरेश दुबे ने बताया कि पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने महापंचायत में सचिवों से विभागीय समाहितकरण (संविलियन) का वादा किया था,लेकिन वर्ष 2022 से अब तक उस पर कोई अमल नहीं किया गया। संगठन ने 11 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन सौंपा, जिसमें प्रमुख रूप से अंशदायी पेंशन की पारदर्शिता,निलंबित सचिवों की बहाली,सेवा में रहते मृत्यु या सेवानिवृत्ति

पर अनुग्रह राशि,अतिरिक्त प्रभार के नियम,शासकीय अवकाश में कार्य की अनिवार्यता,वेतन विसंगति व वेतन रोके जाने की समस्या,सर्विस बुक सत्यापन,वरिष्ठता सूची प्रकाशन,सचिवों के आईडी कार्ड सहित अन्य लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण शामिल है। रैली का नेतृत्व नरेन्द्र राजपूत (प्रदेश अध्यक्ष), धर्मेन्द्र जोशी (प्रदेश महामंत्री)राजेश कुशवाहा (संभाग अध्यक्ष) व नरेश दुबे (संभाग उपाध्यक्ष) ने किया।

पुस्तक समीक्षा

मोहन वर्मा
समीक्षक

सरल सहज काव्य रूप में अभिव्यक्त गीता

रामायण, महाभारत और श्रीमदभगवतगीता हिन्दू धर्म के पवित्र ग्रन्थ हैं। श्रीमदभगवतगीता को उपनिषदों का सार भी कहा जाता है। गीता में मानव जीवन से सम्बंधित जटिल से जटिल समस्याओं का विवेचन और शास्वत समाधान प्रस्तुत किया गया है जिनका सम्बन्ध व्यक्ति,धर्म जाति और देशकाल से ऊपर सार्वभौमिक है । अगर कहा जाए कि गीता हिन्दू धर्म ग्रन्थ नहीं है बल्कि मानव धर्म का ग्रन्थ है तो गलत नहीं होगा क्योंकि इनमें मनुष्य के कर्तव्य-अकर्तव्य, मानव शरीर और आत्मा का गहन विश्लेषण तो है ही धर्म,दर्शन,अध्यात्म और नैतिकता के माध्यम से आत्मा के परमात्मा से मिलन का/मोक्ष का मार्ग भी है

यों तो श्रीमदभागवत गीता संस्कृत का मूल ग्रन्थ है मगर आज विश्व की अनेक भाषाओँ में इसके अनुवादों के माध्यम से विश्वभर में लोग इसका नियमित अध्ययन कर अपना लोक परलोक सुधारने में लगे हैं। गीता को सरल सहज काव्य रूप में अभिव्यक्त करने का प्रयास लेखक जीवन एस रजक ने गीता प्रवाह के माध्यम से किया है।

चुंकि लेखक भोपाल में एक सक्षम प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत है तो उनकी इस पुस्तक पर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव,गृह सचिव ओम प्रकाश श्रीवास्तव,पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान,मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी,गजेन्द्र सिंह शेखावत,अभिनेता मुकेश खन्ना, शंकरानंद, डॉ एच आर नागेन्द्र,नुसरत मेहंदी,डॉ विकास दवे जैसे विद्वत जनों की भी टिप्पणियाँ शामिल है जिनका सार यही है कि गीता मानव चरित्र के निर्माण,और समाज में धर्म स्थापना का महत्वपूर्ण आधार है,काव्यात्मक होने से पुस्तक लय के साथ ह्रदय तक पहुंचती है और भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिए ज्ञान को सरलता से पाठक तक पहुंचाती है। गीता में हर समस्या का निदान विद्यमान है इसके सरल हिन्दी काव्यात्मक होने से युवा पीढ़ी निश्चित ही इससे लाभान्वित होगी।

पुस्तक में श्रीमदभागवत गीता के श्लोकों को बहुत ही सरल तरीके से काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है जो गीता को समझने में सहायक है।

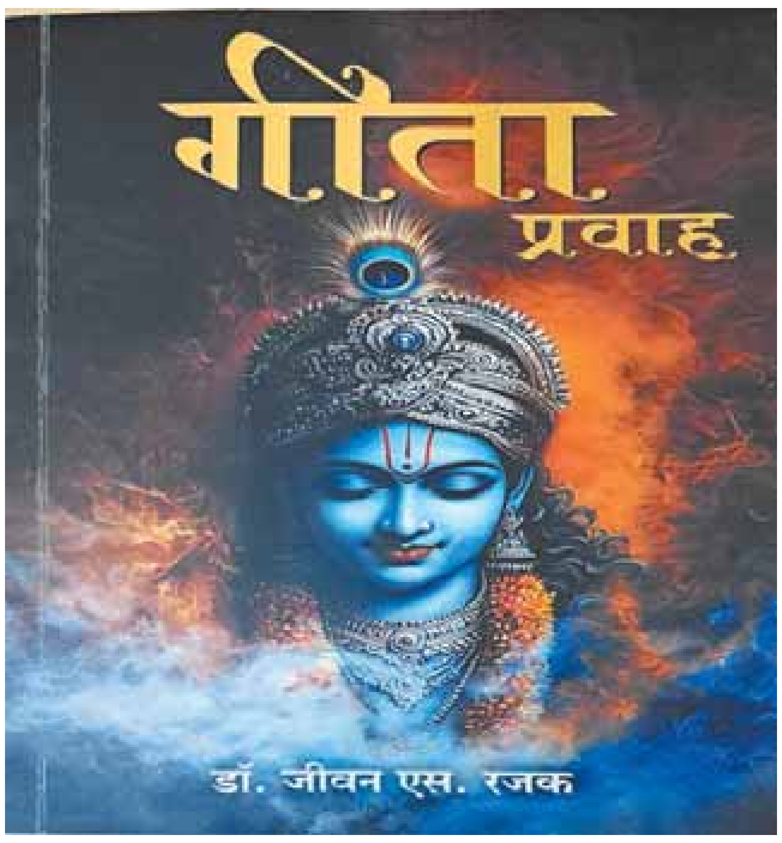

शांति प्रस्ताव अध्याय में देखें-

अज्ञातवास की हुई इतिश्री/प्रारब्ध सबने स्वीकार किया/नेत्रहीन राजा ने फिर भी/न उनका निज अधिकार दिया/ले प्रस्ताव शांति का स्वमेव/श्री कृष्ण हस्तिनापुर आये/और पुत्र प्रमोही राजा को/ बहुविधि नारायण समझाये/

मन का मनोविज्ञान अध्याय में देखें-अर्जुन ने कहा मैं भी तो देखूं उन सबको/जिन जिन ने बिगुल बजाए हैं/उस बुध्हिहीन दुर्योधन को जो आल्हादित करने आये हैं/आभास कृष्ण को था ये भी/क्या सोच रहा है गुडाकेश/इसीलिये मध्य रण में रथ को/ले पहुंच गये श्री द्वारकेश/ रणभूमि में अपने स्वजनों को सामने देखकर मोह से व्याकुल अर्जुन ने कहा है मधुसूदन/है व्याकुल बहुत निज अंतर्मन/समरभूमि का दृश्य देखकर हो रहा कम्पित मेरा तन मन/तीनों लोक मिले फिर भी मैं/युद्ध करने को तेयार नहीं/हमें वानप्रस्थ स्वीकार मगर/अपनों का वध स्वीकार नहीं/ऐसे वचनों का कर उवाच/उद्विग्न अर्जुन को अनुराग हुआ/फिर संतृप्त समर्थ ने है राजन/सब अस्त्र सशत्र का त्याग किया/

गीता के मूल ग्यारवे अध्याय में श्रीकृष्ण का विरत रूप और उनके द्वारा दिए ज्ञान को लेखक ने बहुत ही सरल तरीक से यों लिखा है- केशव ने कहा है कौन्तेय,सब संशय अभी मिटाता हूँ/अपने विराट रूप का अर्जुन/मैं इन्द्रिय बोध कराता हूँ/श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र में राजन/कुछ ऐसा रूप दिखाते है/सम्पूर्ण जगत के उनमें हीअब सभी स्वरूप समाते है।

217 पृष्ठों में और 18 अध्यायों में काव्यात्मक रूप से लिखी गीता प्रवाह पुस्तक कुछ ऐसी सरल और सहज शैली में लिखी गई है कि जो गीता को एक दुरूह और क्लिष्ठ पुस्तक समझकर इससे कन्नी काटते रहे है वे भी इस अमूल्य ग्रन्थ का आनंद लेकर इसमें वर्णित ज्ञान सागर में सहज ही गोता लगाकर इसमें छुपे मोती पा सकते है और यही इस पुस्तक की विशेषता है जो निश्चित ही सभी के लिए और खासकर युवा पीढी के लिए लाभदायक सिध्ह होगी।

पुस्तक - गीता प्रवाह
लेखक - जीवन एस. रजक
प्रकाशक - सर्वत्र
प्रकाशन-भोपाल

कविता

प्रमाण

अनुपमा अनुश्री

अस्तित्व की सृजक,
उद्घोषक, पोषक और
अस्तित्व का
प्रमाण है जो,
प्रमाण देना पड़ता है उसको
अपने होने का
अपने स्वीकार्य का !
क्यों और किसको !
अपनी शाश्वत चैतन्यता
अपने पंख और उड़ान का
अपनी विश्वसनीयता, विद्वत्ता,
उपयोगिता, कार्य क्षमता और
सबसे बढ़कर अपने अस्तित्व का !
कि मैं हूँ, मैं थी ,मैं रहूँगी।
मेरे होना प्रमाणित तो करेगा,
वही विष्णु, जिसने सृजन को जिया
वही महेश जिसने मही पर
मुझे धारण किया होगा
वही अर्धनारीश्वर शिवशक्ति
बन जनकल्याण करेगा,
दुर्जनों पर शर संधान करेगा।
वहीं कृष्ण जिसने मेरे मान को
अपने शीर्ष पर सजाया होगा।
इनके अलावा और कौन
मेरा आँकलन करेगा !
नर निरा अहमक, तो सिर्फ
दाँव खेल- खेल अपमान करेगा।
बीज मानवता का धारण करने वाली
उसमें पत्र ,पुष्प, फल लगा
पोषित करने वाली ,
क्षण -क्षण संस्कृति ,
संस्कार ,वात्सल्य
संरक्षित -संवर्धित करने वाली मैं
धर्म, अध्यात्म की ध्वजवाहक
क्या ही प्रमाणित करुँ और क्यों !
कौन है वो नर श्रेष्ठ ,
जिसके सम्मुख सिद्ध करना है !
कि मेरी महिमा वही समझेगा जो
अमृत लुटाने को विषपान करेगा।

लघुकथा

नकेल

रामेश्वरम तिवारी

सरिता के सिर से उसके बाप का साया, जब वह लगभग पाँच बरस की थी, तभी उठ गया था। गाँव के लोगों कहना है कि उसका बाप शहर से बाजार कर के घर लौट रहा था। रास्ते में अचानक तेज पानी बरसना शुरू हो गया। उसने पानी से बचने लिए पीपल के पेड़ के नीचे पनाह ली, पर आसमान से इतनी ज़ोर की बिजली गिरी कि बेचारा भरी जवानी में पेड़ के नीचे खड़ा-खड़ा ही काल कवलित हो गया। सरिता के बाप की इच्छा थी कि उसकी बेटी खूब पढ़-लिखकर सरकारी अफ़सर बने।

बाप की मृत्यु के बाद माँ ने लोगों के घरों पर झाड़ू-पोंछा, बर्तन साफ़ करने का काम कर अभावों के बावजूद सरिता को पाला-पोसा, पढ़ाया-लिखाया और अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य बनाया ताकि बेटी को उसकी तरह लोगों के घरों पर काम नहीं करना पड़े और वह अपने पति के एकमात्र सपने को साकार कर सके।

सरिता बचपन से ही स्वभाव से गंभीर, देखने में सुंदर और पढ़ने-लिखने में कुशाग्र थी। एक दिन उसकी माँ की तपस्या रंग लाई। सरिता ने आईपीएस की प्रतियोगी परीक्षा में टॉप पोजिशन हासिल की। मनाली में प्रशिक्षण के दौरान उसको सागर नाम के युवक से प्यार हो गया। माँ ने अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर बेटी की ख़ुशी की ख़ातिर सागर के साथ कोर्ट मैरिज करवा दी।

पर सरिता की क़िस्मत में कुछ और ही लिखा था। सुहागरात को सरिता को पता चला कि सागर का असली नाम साहिल है और वह पहले से शादीशुदा ही नहीं, बल्कि उसके दो बच्चे भी हैं। वह चुपचाप बरसते पानी में, रात के घटाटोप अँधेरे में, सागर बनाम साहिल का घर छोड़कर हमेशा के लिए अपनी माँ के घर लौट आई।

इधर पिछले कुछ दिनों से दूरदर्शन और अख़बारों में पढ़ने, देखने और सुनने में आ रहा है कि आजकल सरिता भारत सरकार के गृह मंत्रालय में उच्च पद पर आसीन है। वह छली, छद्मी और धोखेबाज़ों द्वारा देश की भोली-भाली लड़कियों को पैसों और बेहतर ज़िंदगी का प्रलोभन देकर, अपने झूठे प्रेम जाल में फँसाकर, धर्म के धँधेबाज लव जेहादी तत्वों पर नकेल कसने में लगी हुई है।

कविता

जीवित है समय

संदीप राशिनकर

फूलों के महकने
चिड़िया के चहकने
से जीवित है
समय
पौधों का उगता पल्लव
बहती नदिया का कलरव
पृथ्वी के घूमने
सूरज के उगने / ढलने
हवा के चलने
बादल के घिरने
बरसने
से भी
जीवित है समय
वरना
इंसानों की संवादहीनता
पत्थर होती संवेदना
और मुर्दार होती
मनुष्यता ने तो
कोई कसर नहीं छोड़ी थी
समय को मारने में !!

राजकुमार कुम्भज की दो कविताएं
(जवाहर चौधरी के लिए)

बदलता सच

थोड़ा प्यार
भेजना मुझे,
थोड़ा भेजना
धिक्कार भी।
जो कुछ भी
थोड़ा बहुत करना था
कर न सका,
उससे कुछ थोड़ा बहुत
मरना था
मर न सका।
समझ नहीं पा रहा हूं कि
किसे भेजूं लानत?
दुर्बलता
घेरती है फिर -फिर।
शायद
जीवन और कविता का
नये सिरे से
बदल रहा है सच.....

क्या छुपाते हैं

ये मत बताओ मुझे
कि क्या बताते हैं वे?
अगर
बताना ही चाहते हो कुछ
तो सिर्फ़ इतना भर
बता दो कि
मुझसे -तुमसे क्या
छुपाते हैं वे?

बालक सा व्याकुल

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

जब बालक सा व्याकुल
तेरी गोद में छिपकर सोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन के दुख सारे भूल
हर्षित मन बरसाये फूल
विस्मृत करके सारे हार
नोन जैसे जल में खोया
उस रात नहीं मैं रोया।

पथ कंटकित नहीं याद किया
स्वर्ग नहीं फरियाद किया
गतिमान बन किरणों जैसे
भार दर्द नहीं मैं ढोया
उस रात नहीं मैं रोया।

स्वर्णिम सी धीर छाया
छोड़ जगत की मोह माया
प्यासी धरा पर सोम बन
हर्षित वर्णित मैं जोया
उस रात नहीं मैं रोया।

जीवन बगिया अब महका
ज्वार कोई उर में दहका
नव जीवन सा ले आकार
मधुमय बीज बता बोया
उस रात नहीं मैं रोया।

कविता

आओ फिर से पेंग बढ़ायें

डॉ. श्यामबाबू शर्मा

आओ आओ प्यारे बच्चों
हरी नीम की उस डाली पर
घिसी सेरावन को हम हेरैं
द्वयारा की काटी रस्सी से
ऊपर चढ़कर झूला डालैं
आंधी की परवाह न करके
आओ मिलकर पेंग बढ़ायें।
मेघ मही फिसलन तो होगी
बौछारें तिरछी और तीखी
बस अपना धीरज मत खोना
जिसने तुमको हरदम टोका
आगे बढ़ने से है रोका
उसकी वाणी भी चुप होगी
बढ़ै पेंग जब ऊर्ध्व गगन तक
आओ फिर से पेंग बढ़ायें।
पीड़ाओं पर रोने वाले
हाथ भाल पर रखने वाले
सुखद छांव में जीने वाले
चार कदम पर थकने वाले
पल्लवग्राही पथ उपदेशक
सावन में अंधियारा भरते
तुम्हें विलग करने के बाने
पंथ जाति स्मृत करवाते
राम रहीम समझ न पाते
इनसे बच बच कर तुम आओ
आओ फिर से पेंग बढ़ायें।
सच है ! ये झूलों का मौसम
नवाचार और नवविकास के कालखण्ड में
काले बादल तड़ित दामिनी और गर्जन
मॉं के उस सूने आंगन में
खीर बनायें
खामोशी का खोल तोड़कर
उसी मधुरतम स्वर में
अपननापे का गीत सजायें
कुम्हलाई कलियां खिल जायें
मामा की भेजी घुघुरी से
मॉं के मायके के गौरव का
सगुन मनायें
कजरी गायें
आओ आओ प्यारे बच्चों
आओ फिर से पेंग बढ़ायें।।

कविता
तनुजा चौबे

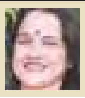

जाना ही नहीं था मुझे

खोने का दुख नहीं है मुझे,पाना ही नहीं था तुझे।
तेरे रास्तों पर चलकर – तुझ तक आना ही नहीं था मुझे।

कई बार पूछा तुमने ये – क्या करोगी जो खो दोगी मुझे?
रिश्ते की नींव कितनी गहरी – दिखाना ही नहीं था मुझे।

मिट्टी ही मिट्टी भरी थी देह में, दिल में रखा था पत्थर,
खुशियों की बारिश कैसी होती है – जतलाना ही नहीं था मुझे।

और निखर गई हूं जब से – उस माटी को छूकर निकली हूं,
गीली माटी से आशियाना सजाना ही नहीं था

वक्त आने पर जो बह जाता किसी भी दिशा में चुपचाप,
पिघली मोहब्बत पर अपना हक जमाना ही नहीं था मुझे।

(लघुकथा)

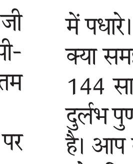

सुरेश सौरभ

ज़ख्म

पापा आज फिर मुझे पूरी कक्षा में मास्टर जी ने जलील किया। आखिर मेरी कॉपी-किताबें कब लाओगे? टुनकते हुए प्रीतम बोला।

बेटा ! क्या बताएँ कोशिश बहुत करता हूँ, पर घर की दाल-रोटी में ही उलझा रहता हूँ, देखो, कुछ बचे तो जल्दी लाता हूँ, तेरी किताबें-विताबें। भगवान् गरीबी किसी को न दे?

पापा हम लोग इतने गरीब क्यों हैं। प्रीतम ने बाल सुलभ जिज्ञासा प्रकट की।

बेटा न पूछो तो अच्छा है। पापा लंबी उबांसी लेकर बोले।

बताओ न बताओ न? प्रीतम मचल गया।

पापा के बरसों पुराने सूख चुके हृदय के जख्म, आज फिर से हरे हो गये, बेटा उस समय मैं तेरे जितना था। पिता जी मेरे परदेस में काम करते थे। हम चार-भाई बहनों को माँ अच्छे से संभालती थीं। पिता जी हर माह अच्छा-खासा पैसा भेजते थे, जिससे हमारा परिवार बड़ी खुशहाल जिन्दगी जी रहा था। हम भाई-बहन आराम से पढ़-लिख रहे थे। तीज-त्योहारों में या किसी छुट्टी में जब कभी पिता जी घर आते, तो हमारी खुशी का कोई ठिकाना न रहता ! कहते-कहते पापा अटक गये, जैसे एकदम से बत्ती चली जाने पर टेलीविजन फट्ट से बंद हो गया हो, तब प्रीतम ने सुकून से लेटे पापा को फिर कुरेदा, ''फिर फिर..गरीबी कैसे आई?

एक पुरोहित जी उस दिन घर में पधारे। माँ को अगड़म-बगड़म न जाने क्या-क्या समझाते हुए बोले, कुंभ का मेला लगा है। 144 साल बाद प्रयागराज में अमृत स्नान का दुर्लभ पुण्य संयोग बना है। दुनिया पुण्य कमा रही है। आप लोग भी जाएँ।.... फिर माँ ने पिता को फोन किया, कुंभ के महत्व को बताया। माँ, पिता जी को, अपने साथ वहाँ ले जाना चाहती थीं ,पर पिता ने अपने काम की व्यस्तता बता कर, माँ को अकेले जाने की अनुमति दे दी। पिता ने कुंभ जाने के लिये, माँ को पर्याप्त पैसा भेज दिया। हम छोटे भाई-बहनों को माँ ने समझाया-तुम सब बच्चे हो, वहाँ भीड़ में खामख्वाह परेशान हो जाओगे, फिर हमें पुचकार कर एक रिश्तेदार के यहाँ ठहरा दिया। कहा-'अमृत स्नान का पुनीत पर्व है, मैं दो दिन बाद अवश्य आ जाऊँगी। कोई चिंता न करना। माँ हमें छोड़कर कुंभ नहाने चलीं गयीं। उनके साथ गाँव के तमाम परिचित लोग थे, इसलिए हमारे पिता जी और हम सब भाई-बहन निश्चिंत थे। पर....

पर क्या ?

पर कुंभ... पापा दुरदुराते हुए अपने होंठ चबाने लगे।

बताओ न पापा आगे क्या हुआ?'

उठ बैठे पापा, उनके दोनों नथुने गुस्से से फूलने-पिचकने लगे।

बताओ न पापा आगे क्या हुआ। शून्य में खो गए पापा को प्रीतम ने झिंझोड़ा।

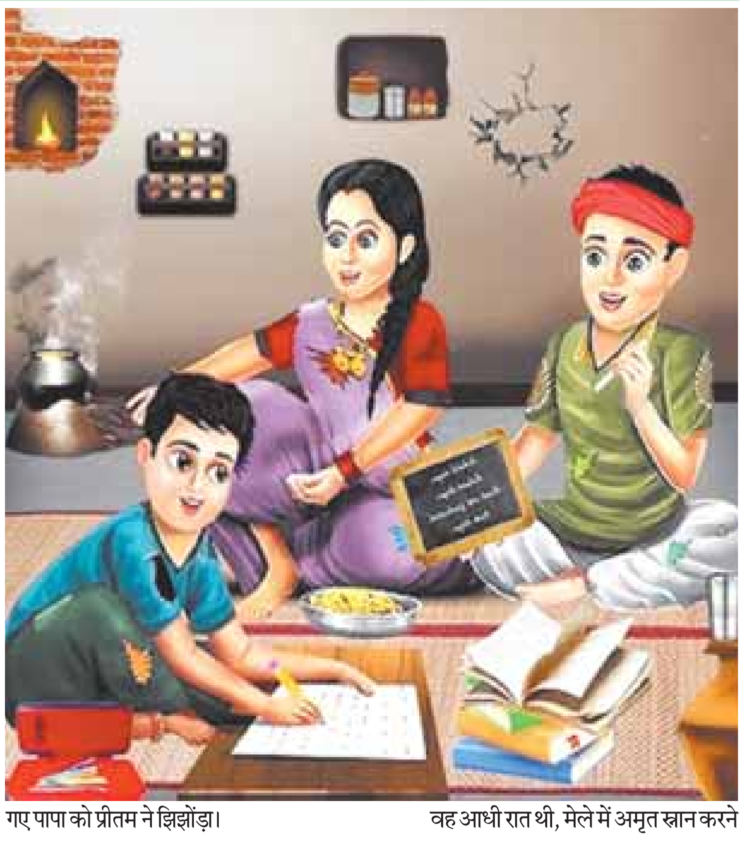

वह आधी रात थी, मेले में अमृत स्नान करने के लिये, हजारों लोग संगम की ओर बढ़ रहे थे। अचानक भगदड़ मच गयी, फिर उसी भयावह भगदड़ में, कोहराम में, आदमी को कुचलते आदमी निकल गये। तमाम मरे, तमाम घायल हुए।.... पिता जी ने माँ को फोन मिलाया, पर फोन बंद। एक दो दिन बाद जब माँ न लौटीं, न फोन मिला, तब दुःखी पिता जी प्रयागराज गये, महीनों तक, सालों तक वहाँ भटकते रहे। इधर-उधर से माँग-जाँच कर लाखों फूँक मारे माँ के लिए, सिर पर बहुत कर्जा हुआ, पर माँ न जिंदा मिलीं न मुर्दा। सरकार नहाने वालों का आंकडा बता रही थी, पर कितने भगदड़ में मर गए, कितने लापता हो गए, उसका पूरा सही आंकड़ा कभी न बता सकी। पिता जी का काम-धाम छूटा। परदेस से वापस आकर गाँव में ही मजूरी-धतूरी करते हुए हमारी देखभाल करने लगे। कर्ज के बोझ में, फिर गरीबी आयी, ऐसी आयी कि हमारी-पढ़ाई लिखाई सब चौपट हो गयी। गरीबी ने हमारे घर में ऐसा स्थाई बसेरा बनाया, जो आज तक हमारे संग बसी हुई है। माँ के कुंभ नहाने से यही पुण्य मिला हमें।

''पापा क्या कुंभ में नहाने से सारे पाप धुल जाते हैं?''

पापा खामोश।

पापा क्या कुंभ में मरने वाले सीधे भगवान के घर जाते हैं?

पापा एकदम मौन।

पापा गंगा नहाने से और क्या-क्या पुण्य मिलता है?

बेटा सो जा मुझे नींद आ रही है,सुबह जल्दी काम पर जाना है। मुझे बस घर की दाल-रोटी के सिवा कुछ नहीं पता।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

एक अच्छी कविता एक अच्छा चित्र ही होता है: कुंवर रवींद्र

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

वे वॉनगॉग कला की बारीकियाँ सीखे बिना ही निरंतर साधना के बल पर निर्मित तीन चित्रों को, जो बोरीनाज़ की खदान के पृष्ठभूमि से संबंधित थीं, कलाकार रैवरैण्ड पीटरसन को दिखाने पहुँचा। पीटरसन को शुरू में इनके चित्र अजीब लगे और उनको सुधारने की गरज से करीब घण्टे भर उस पर आनुपातिक शुद्धिकरण करता रहा। चित्र ढाँचागत स्थिति में तो फिट बैठ गया पर कुछ तो था जो अंदर तक रिसता चला गया वॉनगॉग के, अभी बने चित्र में अनुपात तो था पर भाव कहीं से भी नही था हालांकि पीटरसन अच्छा करना चाहता था। वॉनगॉग चित्र फलक को शून्य भाव से देखते रहे, उहापोह की स्थिति उनके मानसिक पटल पर पर काबिज़ होती चली गयी। वो समझ भी नही पा रहे थे कि मैं गलत हूँ या फिर गुरू के रूप में मेरा चुनाव गलत हुआ है चूंकि कला का क. ख. ग. भी इन्हे नही मालूम था फलतः कुछ भी बोल पाना इन्हे ठीक नही लगा बस मौन की गहरी खाई में ही छिपे रहना चाहते थे वॉनगॉग, शायद कुछ ठीक हो जाय के आस में। प्रसिद्ध कलाकार यूसुफ की कही बात ऐसी परिस्थिति पर खेवनहार के भूमिका में नजर आती है, यूसुफ कहते हैं कि आकृतियों की बनावट के सहारे आप कभी उसके साथ तो कभी किनारे-किनारे चलने लगते हैं। अमूर्त में अहसास बहुत जरूरी है। वही अहसास ही था जो पीटरसन ने अनजाने ही सही पर चित्र से गायब कर दिया था। कवि चित्रकार कुंवर रवींद्र के चित्रों में अहसास अथाह गहराइयों के अंतिम छोर तक शामिल है। मैं बताऊँ वॉनगॉग गलत नही थे, गलत पीटरसन भी नही था, गलत था तो बस पीटरसन द्वारा जल्दबाजी में लिया गया निर्णय जिसका आभास उसे बाद में हुआ जब वो थोड़ी दूर जाकर चित्र को निहारा, पर चित्र के प्रति उसकी निश्छलता तो देखिए दूसरों की तरह बड़ी-बड़ी बाते न कर के बड़ी ही शालीनता से वो अपनी गलती को स्वीकार करते हुए वॉनगॉग से कहा- ''मैने इस चित्र को अनुपात तो दे दिया पर उसका चरित्र छीन लिया''। विसेंट, मुझे यह स्वीकार करने में बहुत बुरा सा लग रहा है, पर मैं इस औरत को पसंद करने लगा हूँ। मुझे पहली बार यह खौफ़नाक लगी पर उसके भीतर कुछ है जो आपके उपर छाता जाता है। मुझे यह चित्र पसंद नही करना चाहिए। यह पूरा-का-पूरा गलत है... बिल्कुल गलत। कला की किसी भी शुरूवाती कक्षा में तुमसे इस चित्र को फाड़ कर दुबारा बनाने को कहा जायेगा, पर इस औरत के भीतर की कोई चीज मुझ तक पहुँचती है- जो मजदूरों की पत्नियों की आत्मा है, विसेंट जिसे तुम पकड़ सके हो और वह किसी भी संपूर्ण सही चित्र से हजार गुना ज्यादा महत्वपूर्ण है। बाद में वॉनगॉग कला की दुनिया में कहाँ पहुँच गया, जानकारी किसी से अछूती नही है विशेषकर साहित्य व कला के क्षेत्र के लोंगों से। मतलब साफ है अकादमिक शिक्षा ही सही हो यह जरूरी नही है, प्रतिभा तो जन्मजात होती है ये अलग बात है कि उसे पहचान पाने में समय लगा हो या फिर नही भी पहचाना जा सका हो। कला को किसी परिभाषा व मापदंड में बाँधना भी मेरे हिंसाब से सही नही है, कुछ की राय इतर भी हो सकती है। टैगोर ने भी कला का अध्ययन नही किया था, फलतः उनके भी चित्र अकादमिक रूपाकारों से विलग के भाव रखते हैं। मेरे कहने का भाव अकादमिक शिक्षा पर प्रहार से कतई ना लिया जाय, मैं तो बस ये बताना चाहता हूँ कि अकादमिक शिक्षा लेने के बाद भी वैश्विक स्तर पर कला को ले जाने के लिए कुछ अलग जो बंधनों से परे हो करना ही पड़ेगा। टैगोर के चित्र अंतस से मुठभेड़ का प्रतिफल कहा जा सकता है तभी तो उनके चित्र

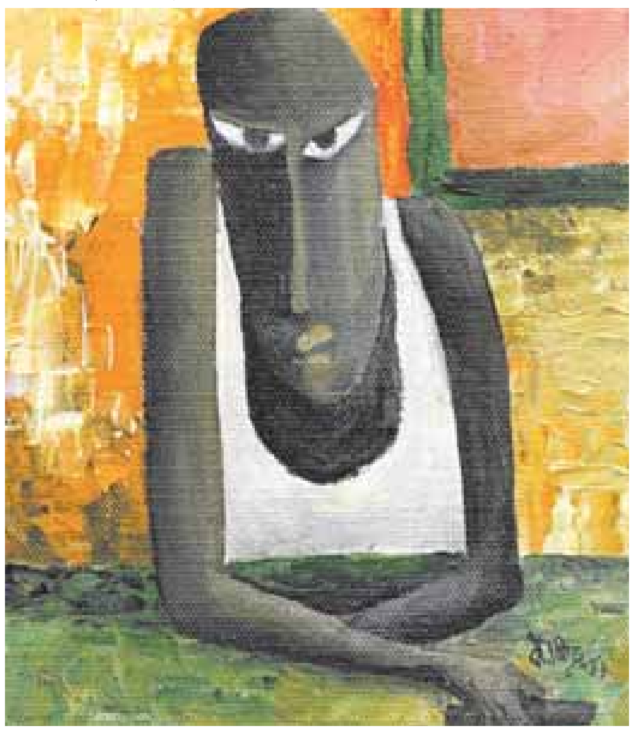

आधुनिक विश्व चित्र श्रृंखला में बे-रोक-टोक शुमार होते चले गये। कुंवर रवींद्र के साथ भी यही हुआ। इनके चित्रों में भी अकादमिक मापदंड नही है इनके यहाँ चित्र सीधे आत्मा से संवाद करते हैं और आत्मा भी संजीदगी से भरी हुई है, चित्रों में संस्कृति और संस्कार की भी छवि झलक जाती है,। मापतौल चित्रों को खोखला बनाते हैं। रंगों के साथ बहते हुए चित्रों की दुनिया का सफर करना हो तो कुंवर रवींद्र के चित्रों से गुजरना होगा, उतरना होगा रंगो के सदाबहार पर्व में। र. वि. साखलकर (आधुनिक चित्रकला का इतिहास) में कहते हैं कि कला मानवनिर्मित है, और मानव के निर्मिति को मानव के संपूर्ण जीवन से कैसे पृथक किया जा सकता है। वृक्ष की जड़, तना, शाखा, पत्ता, फूल या फल के जन्म, विकाश व कार्य का वृक्ष के कल्पना के बिना पृथक ज्ञान असंभव है। कुंवर रवींद्र के व्यक्तित्व की कल्पना इसी पेड़ से की जाने की माँग करती है। हर माँ-बाप की तरह इनके माँ बाप भी इन्हें डाक्टर-इंजीनियर बनाना चाहते थे, पर वो जोगी ही क्या जो बंधनों में बँध जाय।

कीट्स, हल्मन हन्ट और दान्तें की कविताओं पर रोजेटी के बनाये चित्र इस कदर एकाकार हो गये हैं कि उन्हे अलग कर पाना मुनासिब नही हो पाता। अरस्तु ने भी कविता और चित्र के भावनाओं को टटोलने का प्रयास किया है। कुंवर रवींद्र के शब्दों में - एक अच्छी कविता एक अच्छा चित्र ही होता है और एक चित्र एक अच्छी कविता, अच्छी कविता रंगों में उकेर देता हूँ बस, हाँ - इसके लिए पढ़ना पड़ता है और मैं कविताएं खूब पढ़ता हूँ। अदम गोंडवी के कविता (वेद में जिनका हवाला हासिए पर भी नही) पर निर्मित इनके चित्र, रंगों के बहाव में तुफानों के बीच फँसी नन्ही सी चिड़िया समाज के प्रताड़ित तबके का प्रतिनिधित्व करती है जिसे नीले रंग से उभारा गया है कहना गलत भी नही होगा कि नीले रंग से इनका प्रेम जगजाहिर है, देर से ही सही, थोड़ा ही सही सूर्य दिखने की शुरूवात हुई है इस चित्र में और ये चित्र बयाँ करता है कि देर ही सही उजाला सबके भाग्य में है, जीवन में कठिनाइयाँ भयावह स्थिति में आती है पर देर तक नही रूक पाती। एक उम्मीद जगाती हुई कृति। कविता के साथ चित्रों का ऐसा अटूट सामंजस्य कि विचार के अथाह गहराइयों तक डुबो जाने में सक्षम सी प्रतीत हुई हैं। रंगों का इतना स्पष्ट और लयात्मक प्रयोग अनायास ही रचना के आत्मा तक का सफर करा उठता है। उनकी सृजन शक्ति के साथ-साथ रचनात्मक सक्रियता, हर जगह कृतियों की उपस्थिति जग-जाहिर है और अचंभित भी करती है। उनके रंग दर्शक से बतियाने पर उतारू हो आते हैं वो भी बड़े ही जझारू मुद्रा में, बिना किसी हिचक के और संवाद भी तर्क युक्त होता है यदि कोई बतियानें में माहिर हो तो। पीले पृष्ठभूमि में नीली चिड़िया, नीले पृष्ठभूमि में सफेद चिड़िया वो भी विल्कुल ही सपाट, गतिशील मुद्रा में चित्र में भी हलचल पैदा कर जाती है चिड़िया। रंगों का संयोजन गजब का है इनके चित्रों में रात में आसमान जैसे नीली रौशनी से नहाई हो बदरी। रस जिसे कला का आत्मा कहा गया है, इसी बदरी से ही संप्रेषित हो उठी है कहना गलत न होगा कि विंदु-विंदु में सौन्दर्य फूट पड़ा है इनके कृति में और वो दिव्य गुण जो हर सुंदर कही जा सकने वाली कृति में व्याप्त रहती है यहाँ कदम-कदम पर मिलती है। इनके चित्र दर्शक के आत्मा तक उतर कर आत्मियता के साथ व्यवहार करते हैं।

याद आते हैं मिसाइल मैन डॉ. कलाम

पुण्यतिथि पर विशेष

हर्षवर्धन पांडे

लेखक पत्रकार हैं ।

सपने वो नहीं होते जो आपको रात में नींद में आएं लेकिन सपने वे होते हैं जो रात में सोने ना दें। ऐसी बुलंद सोच और अग्नि सरीखी ऊँची उड़ान रखने वाले मिसाइलमैन कलाम ही थे जिन्हें जनता का राष्टपति यूँ ही नहीं कहा जाता था। उनका जीवन सादगी, समर्पण और देशभक्ति का प्रतीक है। एक वैज्ञानिक, शिक्षक, लेखक और भारत के 11वें राष्टपति के रूप में, उन्होंने न केवल विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में योगदान दिया, बल्कि लाखों युवाओं को सपने देखने और उन्हें साकार करने की प्रेरणा भी दी। अपने राष्टपति पद के 5 बरस के कार्यकाल में डॉ. अवुल पकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम ने अन्य राष्टपति के कार्यकालों के मुकाबले न केवल अमिट छाप छोड़ी बल्कि ऐसी मिसाल भारतीय राजनीती में दूर -दूर तक देखने को नहीं मिलती। डॉ. कलाम ने राष्टपति पद के दरवाजे ना केवल आम आदमी के लिए ही नहीं खोले बल्कि समाज के हर तबके को अपने साथ जोड़ने की कोशिश की। अपनी सादगी से उन्होंने पूरे देश की जनता का दिल जीता। डॉ. कलाम की शख्सियत ही यूँ थी कि हर कोई उनका मुरीद हो जाता था। राष्टपति पद पर रहते हुए भी वह आम इंसान की तरह सादगी में रहते थे। वह देश के उन सम्मानित व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने एक वैज्ञानिक और एक राष्टपति के रूप में अपना अमूल्य योगदान देकर देश सेवा की। राष्टपति पद पर अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद से डॉ. कलाम शिलांग, अहमदाबाद और इंदौर के भारतीय प्रबंधन संस्थानों तथा देश एवं विदेश के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में अतिथि प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थे। डॉ. कलाम ने राष्टाध्यक्ष रहते हुए राष्टपति भवन के दरवाजे आम जन के लिए खोल दिए जहां बच्चे उनके विशेष अतिथि होते थे। वे हमेशा शिक्षा और नवाचार को बढ़ावा देने की बात करते थे। उनकी दृष्टि थी कि भारत 2020 तक एक विकसित राष्ट बने, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक 'विजन 2020' में विस्तार से व्यक्त किया।

15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में पैदा हुए अब्दुल कलाम ने मद्रास इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी से स्नातक करने के बाद भौतिकी और एयरोस्पेस इंजीनियरिंग का अध्ययन किया और फिर उसके बाद रक्षा शोध एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) से जुड़ गए। उनका बचपन भी बड़ा संघर्ष पूर्ण रहा। प्राइमरी स्कूल के बाद कलाम ने श्वार्ट्ज हाईस्कूल, रामनाथपुरम में प्रवेश लिया। वहां की शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने 1950 में सेंट जोसेफ कॉलेज, तिरुचिन्नापल्ली में प्रवेश लिया। वहां से उन्होंने भौतिकी और गणित विषयों के साथ बीएससी की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए मद्रास इंस्टीयट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया।

कलाम की इच्छा थी कि वे वायु सेना में भर्ती हों तथा देश की सेवा करें। यह इच्छा पूरी न हो पाने पर उन्होंने बे-मन से रक्षा मंत्रालय के तकनीकी विकास एवं उत्पाद का चुनाव किया। वहां पर उन्होंने 1958 में तकनीकी केन्द्र सिविल विमानन में वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक का कार्यभार संभाला। उन्हीं दिनों इसरो में स्वदेशी क्षमता विकसित करने के उद्देश्य से ''उपग्रह प्रक्षेपण यान कार्यक्रम' की शुरुआत हुई। कलाम को इस योजना का प्रोजेक्ट डायरेक्टर नियुक्त किया गया जिसे उन्होंने अंजाम तक पहुंचाया। जुलाई 1980 में ''रोहिणी' उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के निकट स्थापित करके भारत को ''अंतरराष्टीय अंतरिक्ष क्लब' के सदस्य के रूप में स्थापित कर दिया। उनकी देखरेख में भारत ने ÷अग्नि÷ और ÷पृथ्वी÷ जैसी मिसाइलों का विकास किया जिसने भारत को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया। इसके अलावा, उन्होंने 1980 में ही एसएलवी थर्ड के सफल प्रक्षेपण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसने भारत को अंतरिक्ष में उपग्रह प्रक्षेपण की क्षमता प्रदान की।

डॉ. कलाम ने भारत को रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रक्षामंत्री के तत्कालीन वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. वीएस अरुणाचलम के मार्गदर्शन में ''इंटीग्रेटेड गाइडेड मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम' की शुरुआत की। इस योजना के अंतर्गत 'त्रिशूल' 'आकाश', ''नाग', 'अग्नि' एवं 'ब्रह्मोस' मिसाइलें विकसित हुई। डॉ. कलाम ने जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार तथा डीआरडीओ के सचिव के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। उन्होंने भारत को 'सुपर पॉवर' बनाने के लिए 11 मई और 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण किया। इस प्रकार भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण सफलता अर्जित की और यह डॉ.कलाम की ही रणनीति थी कि पोकरण विस्फोटों की भनक अमरीका तक को नहीं लगी और परीक्षण सफल हुआ।

डॉ. कलाम नवम्बर 1999 में भारत सरकार के प्रमुख वैज्ञानिक सलाहकार रहे और फिर 25 जुलाई 2002 को भारत के ग्यारहवें राष्टपति बने। उनका कार्यकाल उनकी सादगी और जनता से जुड़ाव के लिए जाना जाता है। उन्होंने राष्टपति भवन को जनता का भवन बनाया और विशेष रूप से युवाओं के साथ हर दिन समय बिताया। वे 25 जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे। उनको पहली बार राष्टपति बनाने में नेताजी ने मास्टर स्ट्रोक उस दौर में चला था जब तत्कालीन दौर के वामपंथी दल और विपक्ष एनडीए के इस फैसले के साथ गया था। दूसरी कार्यकाल के लिए सबसे

पहले नेताजी ने तृणमूल कांग्रेस की नेता ममता बनर्जी के साथ डॉ. कलाम को राष्टपति बनाने की बात सामने रखी थी लेकिन कांग्रेस की पसंद प्रणव मुखर्जी थे और वह डॉ.कलाम के साथ नहीं थी। डॉ. कलाम को दूसरे कार्यकाल की कोई चाह नहीं थी लेकिन करोडों प्रशंसकों का दिल उन्होनें नहीं तोड़ा और अपने दूसरे कार्यकाल के चयन पर सभी दलों की सम्मति को जरूरी बताया लेकिन कांग्रेस शायद उन्हें दूसरा कार्यकाल न देने एक मन शायद बना चुकी थी।

उनकी जीवनी ''विंग्स ऑ फायर' और तेजस्वी मन आज भी भारतीय युवाओं और बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय पुस्तक है। डॉ. कलाम की लिखी पुस्तकों में ''गाइडिंग सोल्स = डायलॉग्स ऑन द पर्पज ऑफ लाइफ' एक गंभीर कृति है। इनके अतिरिक्त उनकी अन्य चर्चित पुस्तकें ''इग्नाइटेड माइंड्स = अनलीशिंग द पॉवर विदिन इंडिया' ''एनिवजनिंग अन एमपार्वड नेशन = टेक्नोलॉजी फॉर सोसायटल ट्रांसफारमेशन', ''डेवलपमेंट्स इन फ्ल्यूड मैकेनिक्सि एण्ड स्पेस टेक्नालॉजी', ''2020=ए विजन फॉर द न्यू मिलेनियम' सह लेखक- वाईएस राजन, ''इनिवजनिंग ऐन इम्पॉएर्वड नेशन = टेक्नोलॉजी फॉर सोसाइटल ट्रांसफॉरमेशन' सह लेखक- ए सिवाथनु पिल्ललई बेस्टसेलर रही हैं। डॉ. कलाम ने तमिल भाषा में कविताएं भी लिखी जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनकी कविताओं का एक संग्रह ''द लाइफ ट्री' के नाम से अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ है। डॉ. कलाम की योग्यता के दृष्टिगत सम्मान स्वरूप उन्हें अन्ना यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी, कल्याणी विश्वविद्यालय , हैदराबाद विश्वविद्यालय, जादवपुर विश्वविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, मैसूर विश्वविद्यालय, रूड़की विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय, आंध्र विश्वविद्यालय, भारतीदासन छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, तेजपुर विश्वविद्यालय, कामराज मदुरै विश्वविद्यालय, राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, आईआईटी दिल्ली, आईआईटी मुंबई, आईआईटी कानपुर, बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी, इंडियन स्कूल ऑफ साइंस, सयाजीराव ऑफ बड़ौदा, मनीपाल एकेडमी ऑफ हॉयर एजुकेशन ने अलग-अलग ''डॉक्टर ऑफ साइंस' की मानद उपाधियां प्रदान की। जवाहरलाल नेहरू टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय हैदराबाद ने तो उन्हें ''पीएचडी' तथा विश्वभारती शान्ति निकेतन और डॉ. बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विविद्यालय औरंगाबाद ने उन्हें डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की मानद उपाधियां प्रदान की। इनके साथ वे इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, इंडियन एकेडमी ऑफ साइंसेज बेंग्लुरू, नेशनल एकेडमी ऑफ मेडिकल साइंस नई दिल्ली के सम्मानित सदस्य, एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, इंस्टीट्यूशन ऑफ इलेक्ट्रानिक्स एंड टेलीकम्यूनिकेशन इंजीनियर्स के मानद सदस्य, इजीनियरिंग स्टॉफ कॉलेज ऑफ इंडिया के प्रोफेसर तथा इसरो के विशेष प्रोफेसर रहे। डॉ. कलाम को नेशनल डिजाइन अवार्ड-1980 (इंस्टीटयूशन ऑफ इंजीनियर्स भारत), डॉ. बिरेन रॉय स्पेस अवार्ड-1986 (एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया), ओम प्रकाश भसीन पुरस्कार, राष्टीय नेहरू पुरस्कार-1990 (मध्य प्रदेश सरकार), आर्यभट्ट पुरस्कार-1994, प्रो. वाई नयूडम्मा मेमोरियल गोल्ड मेडल-1996, जीएम मोदी पुरस्कार-1996, एचके फिरोदिया पुरस्कार-1996, वीर सावरकर पुरस्कार-1998 आदि मिले। उन्हें राष्टीय एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार (1997) भी प्रदान किया गया। भारत सरकार ने उन्हें क्रमश= पद्म भूषण (1981), पद्म विभूषण (1990) एवं ''भारत रत्न' सम्मान (1997) से भी विभूषित किया गया।

राष्टपति के रूप में डॉ. कलाम की पहचान अलहदा थी। अपनी अनोखी संवाद शैली के चलते डॉ. कलाम अपने भाषणों में बच्चों को हमेशा शामिल करते थे। व्याख्यान के बाद वह अक्सर छात्रों से उन्हें पत्र लिखने को कहते थे और प्राप्त होने वाले संदेशों का हमेशा तुरंत जवाब देते थे। वीआईपी की परम्पराओं को तोड़कर हर बार मंच से नीचे उतरकर बच्चों से हाथ मिलाने चले जाते थे। अपने कार्यकाल में लाभ के पद संबंधी विधेयक को मंजूरी देने से इनकार करके यह साबित कर दिया था कि वह एक ''रबर स्टैम्प' राष्टपति नहीं हैं। इतना कुछ होने के बाद भी बतौर राष्टपति अपने कार्यकाल में कई आलोचना का भी सामना करना पड़ा। डॉ.कलाम ने अपने पांच साल के कार्यकाल में 21 में से केवल एक दया याचिका पर कार्रवाई की और बलात्कारी धनंजय चटर्जी की याचिका को नामंजूर कर दिया जिसे बाद में फांसी दी गई। यही नहीं, उन्होंने संसद पर आतंकवादी हमले में दोषी करार दिए जाने के बाद मौत की सजा पाने का इंतजार कर रहे अफजल गुरु की दया याचिका पर फैसला लेने में देरी को लेकर अपने आलोचकों को जवाब दिया और कहा कि उन्हें सरकार की ओर से कोई दस्तावेज नहीं मिला जिसके चलते वह कोई कदम नहीं उठा सके। बिहार में वर्ष 2005 में राष्टपति शासन लगाने के विदेश से लिए गए अपने विवादास्पद फैसले पर भी उनको बड़ी आलोचनाओं का सामना करना पड़ा था। हालांकि उन्होंने यह कहते हुए आलोचनाओं को खारिज कर दिया कि उन्हें कोई अफसोस नहीं है।

राष्टपति पद से विदाई के बाद डॉ. कलाम रिटायर और टायर्ड नहीं हुए। तकरीबन 300 से भी ज्यादा कालेजों और स्कूल में वह अपना लेक्चर देने गए। उनके जीवन में 2011 में एक मौका ऐसा भी आया जब अमरीका के एयरपोर्ट में पूर्व राष्टपति होने के बाद भी उनकी सघन तलाशी ली गयी जहाँ उनके कपड़े उतारे जाने की घटना से पूरा देश आहत हुआ था लेकिन डॉ. कलाम ने इस पर कुछ भी नहीं कहा। यह उनकी महानता और जीवटता थी जो उन्हें महामहिम सरीखे शिखर पर ले गई और हमेशा आम इंसान की तरह बेरोकटोक अपना काम समर्पित भाव से करते रहे। डॉ.कलाम ने अपने कार्यकाल में कई राजसी परम्पराओं को तोड़ा। महामहिम होते भी वह सादा जीवन थे। पूरा देश मानो उनका परिवार था।

इस जेनरेशन के बच्चों के लिए डॉ. कलाम ही आईकन थे। बच्चों से खुलकर बातें करना, उनको पढ़ाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था और संयोग देखिये शिलांग में 27 जुलाई 2015 की शाम डॉ. कलाम भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलोंग में एक व्याख्यान दे रहे थे तब दिल का दौर पड़ने से वे बेहोश हो कर गिर पड़े जिससे उनकी साँसों की डोर हमेशा थम गई और पूरा देश महान वैज्ञानिक के निधन से शोक संतप्त हो गया। बेशक उनके निधन से देश ने महान वैज्ञानिक खो दिया है लेकिन इतिहास के पन्नों में वह जनता के राष्टपति के रूप में वह आज भी हमारे दिलों में हमेशा अमर रहेंगे। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने कार्यों और विचारों से भारत को नई दिशा दी। उनकी सादगी, दृढ़ संकल्प और देश के प्रति प्रेम हर भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे न केवल एक वैज्ञानिक या राष्टपति थे बल्कि एक ऐसे शिक्षक थे जिन्होंने हमें सपने देखने और उन्हें सच करने का साहस दियाद्य।

शिव-पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक पर्व 'हरियाली तीज'

हरियाली तीज पर विशेष

श्वेता गोयल

(लेखिका डेढ़ दशक से शिक्षण क्षेत्र से संबद्ध हैं)

हिंदू धर्म में 'तीज' पर्व का बहुत महत्व है, जो सालभर में तीन बार आता है। सबसे पहले आती है सावन के महीने में 'हरियाली तीज', उसके कुछ ही दिन बाद 'कजरी तीज' और फिर 'हरतालिका तीज'। तीनों ही तीज भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित हैं और पूरे देश में बहुत धूमधाम से मनाई जाती हैं। हरियाली तीज 27 जुलाई को मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार, सावन शुक्ल तृतीया तिथि 26 जुलाई को रात 10 बजकर 41 मिनट पर शुरू होगी, जो 27 जुलाई को रात 10 बजकर 41 मिनट तक रहेगी। इसलिए उदया तिथि के अनुसार, हरियाली तीज 27 जुलाई को ही मनाई जाएगी। हर साल श्रावण मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाने वाला हिंदू महिलाओं का महत्वपूर्ण त्यौहार है 'हरियाली तीज', जिसका वर्णन सनातन शास्त्रों में भी मिलता है। यह शिव-पार्वती की पूजा के साथ महिलाओं के सजने-संवरने और खुशियां मनाने का पावन त्यौहार है। हिंदू धर्म में हरियाली तीज को महत्वपूर्ण व्रतों में से एक माना जाता है।

सनातन धर्म में हरियाली तीज का व्रत अपार भक्ति और उत्साह के साथ मनाया जाता है, जो भगवान शिव और देवी पार्वती के दिव्य मिलन का प्रतीक है। मान्यता है कि तीज के दिन भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा करने से कई गुना अधिक फलों की प्राप्ति होती है। पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन माता पार्वती को 107 जन्मों तक तपस्या करने के बाद भगवान शिव ने अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड इत्यादि कई राज्यों में सुहागिन हिंदू महिलाएं दिनभर निर्जला व्रत रखकर अपने पति की लंबी आयु के लिए प्रार्थना कर हरियाली तीज मनाती हैं।

तीज पर्व उस दिन की याद में मनाया जाता है, जब भगवान शिव ने देवी पार्वती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था, जिसके कारण पार्वती को 'तीज माता' के रूप में पूजा जाने लगा। धार्मिक मान्यता के अनुसार माता पार्वती को समर्पित 'हरियाली तीज' व्रत करने से विवाहित महिलाओं का जीवन खुशियों से भर जाता है, उनके पति को लंबी आयु का आशीर्वाद प्राप्त होता है जबकि अविवाहित लड़कियों की शीघ्र शादी के योग बनते हैं। यही कारण है कि विवाहित महिलाओं के साथ अविवाहित लड़कियां भी यह व्रत करती हैं। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना करने का विधान है। विवाहित महिलाएं अपने पति की सलामती और लंबी उम्र की प्रार्थना करने के लिए यह व्रत रखती हैं।

श्रावण महीने में आने वाली इस 'तीज' को 'हरियाली तीज' इसीलिए कहा जाता है क्योंकि यह पर्व मानसून के ऐसे मौसम में मनाया जाता है, जब वातावरण सबसे हरा-भरा होता है। यह पर्व सावन के महीने में ऐसे समय मनाया जाता है, जब संपूर्ण धरा पर हरियाली की मनोहारी चादर बिछी रहती है। सावन की हरी-भरी ऋतु में आने के कारण ही यह पर्व 'हरियाली तीज' कहलाता है। हरियाली तीज के दिन वृक्ष, नदियों और जल के देवता वरुण देव की भी उपासना की जाती है। इसे 'सिंधारा तीज' भी कहा जाता है। 'सिंधारा' उपहार देने की ऐसी प्रथा है, जो नवविवाहितों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती है। हरियाली तीज को 'सावन तीज', 'छोटी तीज', 'मधुश्रवा तीज' इत्यादि नामों से भी जाना जाता है। पंजाब में इसे 'तीयां' और राजस्थान में 'शिंगारा' तीज के नाम से जाना जाता है। राजस्थान में माता पार्वती या तीज माता की शोभायात्राएं निकाली जाती हैं, वहीं हरियाणा में हरियाली तीज पर सरकारी अवकाश रहता है।

इस दिन श्रृंगार करने का काफी महत्व माना जाता है। दरअसल इस त्यौहार पर सुहागिन महिलाओं का अपने हाथों पर मेहंदी लगाना, हरे या लाल रंग के कपड़े पहनना, श्रृंगार करना और हरे रंग की चूड़ियां पहनना बहुत शुभ माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन श्रृंगार करने से मां पार्वती प्रसन्न होती हैं और अपना आशीर्वाद प्रदान करती हैं, इसलिए माता पार्वती की कृपा पाने के लिए सुहागिन महिलाएं श्रृंगार करती हैं और अपने अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं। सावन माह में हरे रंग का विशेष महत्व होता है क्योंकि यह रंग प्रकृति का रंग होता है। हरे रंग का गहरा संबंध वर्षा ऋतु और हरियाली से होता है, जो मन को भी शांति देता है। हिंदू धर्म में हरा रंग अखंड सौभाग्य का प्रतीक माना गया है। हरा रंग प्रकृति, वृद्धि और नवीनता का प्रतीक है, जो इन गुणों को विवाह में भी दर्शाता है। माना जाता है कि धन और समृद्धि की देवी लक्ष्मी भी हरे रंग को पसंद करती हैं। यही कारण है कि हरियाली तीज में इस रंग को पहनना शुभ माना गया है। इसीलिए हरियाली तीज के मौके पर सुहागिन महिलाएं हरी साड़ी, हरी कांच की चूड़ियां इत्यादि खासतौर से पहनती हैं।

हरियाली तीज में बरगद (वट) वृक्ष की परंपरा बहुत महत्वपूर्ण है, घरों में तथा वट वृक्ष की शाखाओं पर झूले डाले जाते हैं, जिन पर महिलाएं एकत्रित होकर दिनभर झूला झूलती हैं, नृत्य करती हैं और लोकगीत गाते हुए खुशियां मनाती हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं में वट वृक्ष को बहुत पवित्र माना गया है, जो ज्ञान का प्रतीक है और हरियाली तीज पर इसकी पूजा करना शुभ माना जाता है। हरियाली तीज के दौरान महिलाएं कठोर निर्जला व्रत रखती हैं, जिसमें वे पूरे दिन भोजन और जल से परहेज करती हैं। शाम को चंद्रमा की पूजा के साथ व्रत का समापन किया जाता है। वृदांवन के कृष्ण मंदिरों में तीज का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है, जहां भगवान के लिए झूले बिछाए जाते हैं, जिसे 'झूलन लीला' कहा जाता है। खासकर विवाहित हिंदू महिलाओं के लिए तो देवी पार्वती और भगवान शिव के दिव्य मिलन को समर्पित यह त्यौहार करवा चौथ के समान महत्व रखता है।

विभिन्न धार्मिक कथाओं के अनुसार 'हरियाली तीज' व्रत की शुरुआत पर्वतराज हिमालय की पुत्री माता पार्वती ने की थी। माता पार्वती ने भगवान शिव को अपने पति के रूप में पाने के लिए काफी लंबे समय तक कठोर तपस्या की थी और यह व्रत किया था। इस व्रत के प्रभाव से ही भगवान शंकर उन्हें पति के रूप में प्राप्त हुए थे। हरियाली तीज मनाए जाने का वर्णन कई पौराणिक कथाओं में मिलता है। ऐसी ही एक पौराणिक कथा के अनुसार माता पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए कई वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। भगवान शिव ने उनकी तपस्या और भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें अपनी अर्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया। इसीलिए इस दिन को माता पार्वती और भगवान शिव के पुनर्मिलन के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि तभी से ही हरियाली तीज का त्यौहार मनाने की परंपरा चली आ रही है और कुंवारी कन्याएं भी हरियाली तीज के दिन मनचाहे वर की प्राप्ति और विवाह में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए यह व्रत रखती हैं।

खंडवा में अभिनेता आशीष पेंडसे का अभिनंदन

खण्डवा। स्थानीय श्री गणेश अथर्वशीर्ष मण्डल और आर्य महिला समाज के संयुक्त तत्वावधान में एक गरिमामय कार्यक्रम में आशीष पेंडसे का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर बड़ी संख्या में महाराष्ट्रियन समाज जन उपस्थित थे, साथ ही इन क्षणों को कैमरे में कैद करने के लिये आमिर खान प्रॉडक्शन्स मुम्बई से आये डॉक्युमेण्ट्री टीम के सदस्य भी उपस्थित रहे ।

उल्लेखनीय है कि जन्मत डाउन्स सिण्ड्रोम कण्डीशन होने के बावजूद आशीष ने पूरी लगन से काम करते हुए आमिर खान प्रॉडक्शन्स की फिल्म सितारे ज़मीन पर के लिये न केवल ऑडिशन में सफलता पायी बल्कि शूटिंग के कठिन शेड्यूल को पूरा किया । उसके अभिनय की स्वाभाविकता को भरपूर सराहना मिली और बौद्धिक चुनौतियों का सामना कर रहे लोगों से सम्बन्धित मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने में मूवी ने सफलता पाई । यह साफ सुथरी फिल्म जागरूकता की दिशा में हमारे समाज को कई कदम आगे ले जाने वाली है । मैच हार कर भी दिलों को जीतने वाले सितारों ने हम सभी को एक महत्वपूर्ण सन्देश दिया है । श्री गणेश अथर्वशीर्ष मण्डल के अध्यक्ष सुधीर देशपाण्डे और आर्य महिला समाज की सचिव सौ. प्रज्ञा लोंढे ने आशीष का पुष्पहार से स्वागत करते हुए स्मृति चिह्न भेंट किया और उज्जवल भविष्य की कामना की। माता स्वाति पेंडसे ने आशीष के पालन पोषण पर भावुक उद्बोधन दिया। पिता आनन्द पेंडसे ने फिल्म में चयन और शूटिंग से सम्बन्धित अपने विचार व्यक्त किये। आशीष के बारे में बात करते हुए सुधीर देशपांडे ने कहा कि डाउन सिंड्रोम पीड़ित व्यक्ति भले व्यवहार में अपनी मूल आयु से भले ही कम दिखाई देते हों किंतु सामान्य आयु व्यवहार वाले व्यक्तियों का आचरण भी संदेह पूर्ण होता हैद्य ऐसे बच्चों के लिए हमें सहानुभूति पूर्वक उनके विकास की दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर दोनों संस्थाओं द्वारा डॉक्युमेण्ट्री टीम के सदस्यों का भी पुष्पहार से स्वागत किया गया । आशीष ने एक कविता प्रस्तुत कर कार्यक्रम का समापन किया । मंच संचालन एवं आभार प्रदर्शन मनोज कुलकर्णी ने किया।

जल गंगा संवर्धन अभियान की उपलब्धियों की प्रदर्शनी, मुख्यमंत्री करेंगे शुभारंभ

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के सबसे महत्वकांक्षी अभियान जल गंगा संवर्धन ने राष्ट्रीय स्तर पर एक अलग पहचान स्थापित की है। यह अभियान अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा बन गया है। इस अभियान की अभूतपूर्व उपलब्धियों को प्रदर्शनी के रूप में संयोजित किया गया है। मध्यप्रदेश विधानसभा का मानसून सत्र कल 28 जुलाई 2025 से शुरू हो रहा है। विधानसभा सदस्यों के अवलोकन के लिए विधानसभा के सेंट्रल हॉल एवं फोर लेन मुक्ताकाशी परिसर में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' की सफलताओं पर केन्द्रित प्रदर्शनी मध्यप्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान, मध्यप्रदेश की बावड़ियॉं, जलचर- जलीय जीवन के प्राणतत्व, अमृतस्य नर्मदा, उपग्रह की नजर से प्रदेश की प्रमुख जल संरचनाएँ को वीर भारत न्यास द्वारा प्रदर्शित किया जा रहा है। प्रदर्शनी का शुभारंभ 28 जुलाई को दोपहर 1~30 बजे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर करेंगेद्य इस प्रदर्शनी में जनसंपर्क विभाग, म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, संचालनालय पुरातत्व, अभिलेखागार और संग्रहालय व बरकतउल्ला विश्वविद्यालय सहयोगी संस्थाएँ हैं।

मुख्यमंत्री के संस्कृति सलाहकार एवं वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने कहा कि यह प्रदर्शनी नदियों के स्वास्थ्य की ओर समाज को संवेदनशील बनाने का एक सांस्कृतिक प्रयास है। इसी संकल्प के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के अनुरूप मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ने 30 मार्च से 30 जून 2025 तक 90 दिवसीय जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया। प्रदेशभर में चले इस अभियान में जनभागीदारी की अद्भुत मिसाल देखने को मिली। स्थानीय नागरिकों ने जल संरक्षण के प्रति अपनी सहभागिता सुनिश्चित की। न्यासी सचिव ने बताया कि देश में पहली बार ही ऐसा हुआ होगा कि नदियों, जलस्रोतों व जल संरचनाओं को संरक्षित करने 2 लाख 30 हजार 740 से अधिक जलदूतों ने पंजीयन कराया। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत अभूतपूर्व उपलब्धि हासिल कर निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति करते हुए मध्यप्रदेश में 84 हजार 726 खेत तालाब, 1 लाख 4 हजार 276 कूप रिचार्ज पिट और 1283 अमृत सरोवरों का निर्माण कार्य कराया गया। इतना ही नहीं जल संचय करने वाले जिलों में खंडवा देशभर में नबर वन बनकर हमारे सामने है। राज्यों की श्रेणी में हमें चौथा स्थान प्राप्त हुआ है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को अब जैविक उत्पाद बाजार में धोखाधड़ी का केंद्र माना जा रहा है: दिग्विजय सिंह

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह ने आरोप लगाया है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को अब जैविक उत्पाद बाजार में धोखाधड़ी का केंद्र माना जा रहा है, जिससे अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा मान्यता रद्द की जा रही है।

उन्होंने कहा कि 2001 में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम शुरू किया, जिसे कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण लागू करता है। इसका उद्देश्य जैविक उत्पादों के निर्यात को प्रमाणित और विनियमित करना है। इस ढांचे के तहत, एनपीओपी प्रमाणन निकायों को मान्यता देता है, जो आंतरिक नियंत्रण प्रणाली (आईसीएस) का सत्यापन करती हैं। आईसीएस 25 से 500 किसानों के समूह होते हैं, जो जैविक कपास उगाते हैं। वर्तमान में (2025 तक) लगभग 6,046 आईसीएस और 35 सीबीएस हैं। यह प्रक्रिया 'Tracenet' नामक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से संचालित होती है, जो जैविक उत्पादन का ट्रैक रखने और सत्यापन करने में मदद करता है। ICS के सत्यापन के बाद एक 'ट्रांजैक्शन सर्टिफिकेट' जारी किया जाता है, जो उस आईसीएस को जैविक घोषित करता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को अब जैविक उत्पाद बाजार में धोखाधड़ी का केंद्र माना जा रहा है, जिससे अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा मान्यता रद्द की जा रही है।

जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र ने मनाया कारगिल विजय दिवस

भोपाल। मानसरोवर विश्वविद्यालय, भोपाल में जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र द्वारा कारगिल विजय दिवस के 26 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ों श्रोताओं की उपस्थिति रही, जिनमें विद्यार्थी, प्राध्यापक, सेना से जुड़े नागरिक, शोधार्थी एवं समाज के विविध वर्गों के प्रतिनिधि शामिल थे।

कार्यक्रम का आयोजन भारतीय सेना के पराक्रम, बलिदान और 1999 में कारगिल युद्ध में प्राप्त ऐतिहासिक विजय को स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने तथा राष्ट्रभक्ति की भावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से किया गया।

जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र एक शोध आधारित संस्था है, जो जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी वास्तविकताओं को जनसामान्य और युवाओं के सामने लाने का कार्य करती है।

इस अवसर पर डॉ. विश्वास चौहान, संयोजक ङ्क जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र, मध्यभारत प्रांत एवं सदस्य ङ्क मध्यप्रदेश निजी विश्वविद्यालय आयोग ने संस्थान की कार्य दिशा पर प्रकाश डालते हुए कहा - हमारा उद्देश्य केवल जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की स्थितियों का अध्ययन करना ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर को भारत के अभिन्न अंग के रूप में पुनः स्थापित करना और अखंड भारत की दिशा में ठोस प्रयास करना है।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में कर्नल श्री नारायण पारवानी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया। उन्होंने कारगिल युद्ध के वीर सपूतों की शौर्यगाथा को जीवंत किया। वीडियो के माध्यम से जब उन्होंने युद्ध के दृश्य और सैनिकों के साहस की कहानियाँ साझा कीं, तो श्रोताओं की आंखें नम हो उठीं। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कारगिल युद्ध का हर भारतीय सैनिक मानसिक रूप से इस संकल्प के साथ लड़ रहा था कि या तो तिरंगा लहराकर लौटेंगे, या फिर तिरंगे में लिपटकर।

कार्यक्रम का संचालन डा. आर. डी. मांडवकर ने कुशलता से किया तथा आभार प्रदर्शन मानसरोवर कॉलेज के प्राचार्य श्री अजय सिंह राजपूत द्वारा किया गया।आयोजन की जानकारी जम्मू कश्मीर अध्ययन केंद्र, मध्यभारत प्रांत के मीडिया प्रभारी श्री गीत धीर द्वारा साझा की गई।

तवा नदी का जलस्तर बढ़ा, सतपुड़ा बांध के सात गेट खोले

बैतूल। बैतूल में बारिश ने एक बार फिर रफ्तार पकड़ ली है। पिछले 24 घंटों से लगातार हो रही बारिश में एक इंच से ज्यादा पानी गिरा है। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के लिए जिले में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इधर सतपुड़ा बांध क्षेत्र में तीन इंच से ज्यादा बारिश होने के बाद बांध के सात गेट छह-छह फुट तक खोले गए हैं। इनसे 32 हजार क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है। शुक्रवार को गेट तीन-तीन फुट खोले गए थे, जिनसे 17 हजार 300 क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा था। रात दो बजे गेटों की ऊंचाई बढ़ाने से बांध का जलस्तर 1430 फुट से घटकर 1429.50 फुट हो गया है। निचले क्षेत्रों में तवा नदी का जलस्तर बढ़ा है, लेकिन कोई इलाका प्रभावित नहीं हुआ है। सतपुड़ा के गेट खोलने से तवा बांध में भी पानी बढ़ रहा है। जिले में पिछले 24 घंटे के दौरान 26 जुलाई को प्रात~ 8 बजे तक 37.2 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है। जिसमें तहसील बैतूल में 30.4, घोड़ाडोंगरी में 57.0, चिचोली में 28.0, शाहपुर में 42.0, मुलताई में 49.2, प्रभात पट्टन में 29.2, आमला में 22.0, भैंसदेही में 60.0, आठनेर में 17.2. तथा भीमपुर में 37.0 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। बता दे कि जिले की औसत वर्षा 1083.9 मिमी है तथा जिले में अभी तक 435.9 मिमी औसत वर्षा दर्ज की गई है, जबकि गत वर्ष इस अवधि तक 411.1 मि.मी.औसत वर्षा दर्ज की गई थी।

एक रात में पांच दुकानों के टूटे ताले, नकदी चोरी

बैतूल। शहर के व्यस्ततम क्षेत्र गंज में शुक्रवार रात अज्ञात चोरों ने पांच दुकानों के ताले तोड़े। नेशनल एजेंसी, गुप्ता बर्तन भंडार, साहनी मेडिकल एजेंसी और शिवहरे शराब दुकान में चोरी का प्रयास किया गया। गुप्ता बर्तन भंडार से 20 हजार रुपए की नकदी चोरी हुई। साहनी मेडिकल एजेंसी के संचालक मनजीत सिंह ने बताया कि रात 3.20 बजे चार संदिग्ध दिखे। एक बाहर रैकी करता रहा, जबकि अन्य अंदर घुसे। स्क्रूड्राइवर से दराज खोलने की कोशिश की, लेकिन नगदी न मिलने पर खाली हाथ लौटे। नेशनल एजेंसी में शटर के पीछे काउंटर होने से चोर अंदर नहीं घुस सके। शिवहरे की शराब दुकान में चौकीदार की नींद खुलने पर चोर भाग गए। चोरी की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है, जिसमें चार चोर अलग-अलग दुकानों के आसपास सक्रिय दिखाई दे रहे हैं। चोर बड़े आराम से चोरी करते और सडक़ पर घूमते भी नजर आ रहे हैं। गंज थाना प्रभारी सरविंद धुर्वे के मुताबिक सीसीटीवी कैमरे में दिख रहे चोर बाहरी क्षेत्र के प्रतीत हो रहे है, इनकी पहचान कर तलाश की जाएगी। इधर चोरी की घटनाओं से व्यापारी वर्ग में रोष व्याप्त है। व्यापारियों का कहना है कि लगातार बढती चोरियों से व्यवसाय प्रभावित हो रहा है और सुरक्षा व्यवस्था में गंभीर खामियां उजागर हो रही हैं। इसके पहले भी गंज क्षेत्र में चोरी की कई घटनाएं हो चुकी हैं। कुछ दिनों पहले व्यापारियों की नाराजगी के बाद पुरानी चौकी को शुरू भी किया है, लेकिन यहां पर पुलिसकर्मी के न रहने से चोरों के हौंसले एक बार फिर बुलंद हो गए।

हनुमान डोल मंदिर चौथी बार निशाने पर- शहर से करीब 10 किलोमीटर दूर स्थित प्रसिद्ध हनुमान डोल मंदिर में भी चोरी की घटना हुई। चोरों ने मंदिर की दीवार में सेंध लगाकर अन्दर प्रवेश किया और दानपेटी को तोडक़र उसमें रखी नकदी चुरा ली। श्रद्धालुओं में इस घटना को लेकर भारी आक्रोश है। बताया जा रहा है कि मंदिर को एक साल के भीतर चोरों ने चौथी बार अपना निशाना बनाया है। फिलहाल एक ही रात में पांच अलग-अलग स्थानों पर चोरी की वारदातें सामने आने से स्थानीय नागरिकों में दहशत का माहौल है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर चोरों की तलाश तेज कर दी है और इलाके में तलाशी अभियान चलाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत वधुओं को नहीं मिली राशि, बार-बार चक्कर लगाने का मजबूर

बैतूल, आठनेर और घोड़ाडोंगरी ब्लाक की वधुओं को राशि का इंतजार

बैतूल। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत हुई सरकारी शादियों में सात फेरे लेने के बाद अब वधुओं को राशि के लिए चक्कर काटने पड़ रहे हैं। हालांकि यह स्थिति जिले के सिर्फ तीन ब्लाकों में है, जहां अभी तक वधुओं के खातों में राशि नहीं आई है। सामाजिक न्याय विभाग का कहना है कि जिले के सात ब्लाक में राशि का भुगतान हो गया है और जिन ब्लाक से बिल नहीं लगे है, वहां राशि का आवंटन नहीं हो पाया है। बैतूल जनपद में बार-बार सीईओ बदलने के कारण बैतूल जनपद का बिल भी पेंडिंग है। जिसकी वजह से राशि मिलने में देरी हो रही हैं। वहीं वधुओं का कहना है कि कुछ ब्लॉकों में तो विवाद के बाद राशि आवंटित कर दी गई, लेकिन हमें राशि के लिए चक्कर काटने पड़ रहे हैं। बता दे कि जिले के ब्लाकों में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत सामुहिक विवाह कार्यक्रमों का आयोजन हुआ था। जिसमें हजारों जोड़ों ने सात फेरे लिये थे। जिन्हें शासन की तरफ से 49 हजार रूपये की राशि दी जानी थी, किन्तु अभी तक बैतूल, आठनेर और घोड़ाडोंगरी ब्लाक के जोड़ों के खाते में राशि नहीं पहुंची है। जिससे लोगों में नाराजगी बनी हुई है।

जिले के सभी ब्लाकों में आयोजित हुए थे विवाह

मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह योजना के तहत जिले के दसों ब्लॉकों में विवाह आयोजन कराए गए थे। इनमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अलग-अलग आयोजन हुए थे। जानकारी के अनुसार बैतूल में 2 मई को आयोजित मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत 740 जोडे, 5 मई को भैंसदेही में 739 जोड़े, 8 मई को शाहपुर में 634 जोड़े, 14 मई को बैतूल पुलिस ग्राउंड में चिचोली-आठनेर क्षेत्र के 1011 जोड़े, 22 मई को घोड़ाडोंगरी में 200 जोड़े, आमला में 375, मुलताई में 288, प्रभात पट्टन में 269 जोडों का अलग-अलग तिथियों पर विवाह कार्यक्रम संपन्न हुआ था। एक अनुमान के मुताबिक इन सामुहिक विवाह कार्यक्रम में संपन्न हुए विवाह में से अभी एक हजार के करीब वधुओं को राशि मिलना बाकी है।

जिले के सात ब्लाकों में राशि वितरण की कार्रवाही

सामाजिक न्याय पंचायत विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जिले के सात ब्लाकों में वधुओं को राशि का वितरण कर दिया गया है, या राशि वितरण की कार्रवाही पूर्ण की जा चुकी है। जिसमें मुलताई, शाहपुर, आमला, चिचोली, प्रभातपट्टन, भैंसदेही और भीमपुर क्षेत्र में हुए मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह कार्यक्रम के बिल लग चुके है और अधिकांश वधुओं के खातों में राशि भी पहुंच गई है। जिसके तहत प्रत्येक वधु को 49 हजार की राशि बैंक खाते में डाली है। शादी के पहले विभाग ने सभी वधुओं के बैंक खाते की डिटेल भी ले ली थी, जिन वधुओं को राशि नहीं मिली है, उनके खातों में राशि डाले जाने की कार्रवाही की जायेगी।

राशि के लिए बार-बार चक्कर लगा रहे वर-वधु

बैतूल, आठनेर और घोड़ाडोंगरी तीनों ब्लाक के वर-वधु राशि के लिए बार-बार चक्कर लगा रहे है। बैतूल जनपद के अंतर्गत हुए सामुहिक विवाह कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले वर-वधुओं का कहना है कि 2 मई को पुलिस ग्राउंड में सामुहिक विवाह कार्यक्रम संपन्न हुआ था। लेकिन मई, जून और अब पूरा जुलाई माह बितने को है, अभी तक वधु के खातों में राशि नहीं आई है। कई बार जनपद पंचायत में भी राशि के संबंध में जानकारी ली, लेकिन कोई भी अधिकारी सटिक तौर से नहीं बता पा रहा है और न ही कोई जानकारी मिल पा रही है कि राशि कब तक खातों में आयेगी। जिसके कारण वर-वधु परेशान हो रहे है।

इनका कहना है-

जिले के सात ब्लाकों में वधुओं के खातों में राशि पहुंच गई है। जिन्हें खातों में राशि नहीं आई है, उसकी प्रक्रिया पूर्ण कर दी है। केवल बैतूल, आठनेर और घोड़ाडोंगरी ब्लाक में हुए विवाह के बिल अभी तक नहीं लगे है। बैतूल जनपद में बार-बार सीईओ बदलने के कारण देरी हो रही है। जल्द ही इन ब्लाकों के वधुओं के खातों में भी राशि पहुंच जायेगी।

\- **रोशनी वर्मा,** सहायक संचालक, सामाजिक न्याय पंचायत विभाग, बैतूल

खाद की कमी से लाखों किसान हलाकान, मुख्यमंत्री केन्द्र से बात कर खाद संकट दूर करवायें: अजयसिंह

भोपाल। पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजयसिंह ने कहा है कि पूरे प्रदेश में इस साल फिर खाद का संकट गहरा गया है । प्रदेश में खाद वितरण की पारदर्शी व्यवस्था लागू करने की सख्त जरूरत है । किसान हलाकान हो रहे हैं । प्रदेश को इस साल जरूरत से आधी मात्रा में ही खाद अभी तक आवंटित हुई है । किसानों में खाद लेने के लिए मारा मारी मची हुई है । उन्होंने मुख्यमंत्री मोहन यादव से आग्रह किया है कि केन्द्र सरकार को पत्र लिखने में समय जाया न करें बल्कि व्यक्तिगत रूचि लेकर स्वयं दिल्ली जाकर या फोन पर केन्द्र सरकार से बात करें । कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान तो मध्य प्रदेश के ही हैं तो फिर क्या दिक्कत है? प्रदेश में खाद की किल्लत क्यों हो रही है ?

अजयसिंह ने मुख्यमंत्री को सचेत करते हुए कहा कि किसानों का आक्रोश बढ़े उसके पहले ही खाद की पर्याप्त व्यवस्था करवायें अन्यथा अप्रिय स्थिति निर्मित होने में देर नहीं लगेगी। उन्होंने कहा कि प्रायवेट दुकान वाले वर्तमान परिस्थितियों का फायदा उठाकर आपदा में अवसर तलाश रहे है । यूरिया की काला बाजारी हो रही है और ब्लैक में दोगुने दामों पर बिक रही है । उसी किसान को यूरिया मिल रही है जो न चाहते हुए भी नैनो यूरिया की बोतल खरीद रहा है । डीएपी की जगह एनपीए लेने के लिए दबाव बनाया जा रहा है जबकि इस वक्त मक्का और धान के लिए यूरिया की सख्त जरूरत है ।

सिंह ने कहा कि दो बोरी यूरिया के लिए भी किसान केन्द्रों पर रात काट रहे है । कई दिन चक्कर काटने के बाद भी आवश्यकता से कम यूरिया मिल रहा है । कुछ ही किसानों को प्राइवेट दुकानो से खाद लेने के लिए टोकन दिये जा रहे है और बाकी आधे से ज्यादा किसान मायूस होकर लौट रहे है । उन्होंने कहा कि अमानक बीज के मामले भी सामने आए है जो बोनी के बाद अंकुरित ही नहीं हुए ।

बैतूल के उद्योगपतियों ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त होने पर बैतूल विधायक का किया सम्मान

इस मौके पर जिले की औद्योगिक संभावनाओं पर हुआ विचार

बैतूल। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल के बैतूल आगमन के अवसर पर जिले के समस्त उद्योगपतियों ने बैतूल डिस्ट्रिक्ट औद्योगिक संघ के नेतृत्व में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया और उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। इस विशेष अवसर पर उद्योगजगत के प्रतिनिधियों ने खंडेलवाल से मुलाकात कर जिले के औद्योगिक विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। उद्योगों से जुड़े विषयों को गंभीरता से सुनते हुए खंडेलवाल ने शीघ्र ही संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित करने का आश्वासन दिया, जिसमें सभी जरूरी विषयों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया जाएगा। संघ की ओर से यह भी बताया गया कि कुछ उद्योगपति साथी विशेष कारणों से इस अवसर पर उपस्थित नहीं हो सके, लेकिन उन्होंने भी अपनी हार्दिक शुभकामनाएं एवं समर्थन संघ के माध्यम से माननीय खंडेलवाल को प्रेषित किया। बैतूल डिस्ट्रिक्ट औद्योगिक संघ ने खंडेलवाल द्वारा दिखाए गए सकारात्मक दृष्टिकोण की सराहना करते हुए उम्मीद जताई कि आगामी समय में जिले के उद्योगों को नई दिशा और गति मिलेगी। श्रीजी उद्योग से आशीष पांडे, बैतूल प्रेस स्टील इंडस्ट्री से सुदर्शन सिंग, शक्ति फूड प्रोडक्ट से अनिल अग्रवाल, कृष्णा कृषि यंत्र से कृष्णा चढोकार, भैयाजी इंटरप्राइजेज से दिलीप मालवी, अमन इंडस्ट्रीज से शेख अख्तर, भारतीय ब्रेड इंडस्ट्रीज मनोज सातपुते विशेष रूप से उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 'बीमा सखी योजना' की ऐतिहासिक शुरुआत: शिवराज सिंह

प्रशिक्षित स्वयं सहायता समूह सदस्यों को ग्राम पंचायत स्तर पर बीमा सखी के रूप में नियुक्त किया जाएगा

नई दिल्ली। केंद्रीय ग्रामीण विकास और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज 'बीमा सखी योजना' को लेकर एक वक्तव्य जारी किया है। वक्तव्य में उन्होंने कहा कि 'प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में 'बीमा सखी योजना' की ऐतिहासिक शुरुआत हुई है। यह योजना न केवल महिला सशक्तिकरण, बल्कि ग्रामीण भारत और अर्ध शहरी क्षेत्रों को आर्थिक सुरक्षा मुहैया कराने की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। केंद्र सरकार, देश की प्रत्येक महिला को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए संकल्पित है।'

केंद्रीय मंत्री श्री चौहान ने कहा कि केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने भारत सरकार के मिशन '2047 तक सभी के लिए बीमा' को साकार करने हेतु भारतीय जीवन बीमा निगम के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी की है। राष्ट्रीय आजीविका मिशन वित्तीय समावेशन पहल के अंतर्गत इस योजना के तहत, देशभर की प्रशिक्षित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को 'बीमा सखी' के रूप में ग्राम पंचायत स्तर पर नियुक्त किया जाएगा।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि बीमा सखी योजना, महिला उद्यमिता और वित्तीय आज़ादी का मजबूत माध्यम है। यह कदम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के विजन को साकार करने की हमारी प्रतिबद्धता दर्शाता है। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से ही इस योजना की शुरुआत की गई है। 'बीमा सखी' बनकर महिलाएं अब उद्यमिता एवं आय के नए अवसर प्राप्त कर रही हैं, जिससे एसडीजी 5 (जेंडर समानता) के लक्ष्यों और 'लखपति दीदी मिशन' को बल मिलेगा। उन्होंने बताया कि 15 अगस्त तक देश में लखपति दीदियों की संख्या 2 करोड़ हो जाएगी।

श्री शिवराज सिंह ने कहा कि रोजगार सृजन व महिला श्रम-बल में भागीदारी के तहत स्थानीय स्तर पर 'बीमा सखी' योजना शहरी और ग्रामीण रोजगार में नया अध्याय जोड़ रही है। इस महत्वपूर्ण योजना में समावेशी बीमा इकोसिस्टम के अंतर्गत बीमा सखियां न केवल बीमा योजनाओं की पहुंच बढ़ा रही हैं, बल्कि अंतिम छोर तक विश्वास-आधारित सेवाओं का विस्तार भी कर रही हैं।

आगे केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकारी प्राथमिकताओं से तालमेल होने के साथ ही यह पहल 'जन धन से जन सुरक्षा', डिजिटल इंडियाल और महिला कौशल विकास जैसी योजनाओं को मजबूती प्रदान कर रही है। आपदा सुरक्षा में योगदान देते हुए आपदा प्रभावित क्षेत्रों में, यह योजना ग्रामीण परिवारों को वित्तीय जोखिम से बचाने के लिए सुरक्षा कवच सिद्ध होगी। श्री चौहान ने कहा, बीमा सखी केवल बीमा की एजेंट नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव की प्रणेता हैं। 'बीमा सखियां' गाँव-गाँव में वित्तीय सुरक्षा की मशाल लेकर आगे बढ़ रही हैं, जिसके परिणामस्वरुप गांव आर्थिक रूप से मजबूत और महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही हैं।

अंत में श्री शिवराज सिंह ने, राज्यों और सभी भागीदार संस्थाओं से आह्वान किया कि वे इस जनांदोलन का हिस्सा बनें और 'बीमा सखी योजना' को हर गाँव, हर घर तक पहुंचाने में सहयोग करें। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि, बीमा सखी योजना एक परिवर्तनकारी आंदोलन है, इसके सहयोग से भारत को लचीला, समावेशी और बीमाकृत राष्ट्र बनाने में मजबूत योगदान मिलेगा। यह पहल हमारी ग्रामीण माताओं-बहनों की आर्थिक सुरक्षा और समग्र विकास के संकल्प को नई ऊर्जा प्रदान करेगी।

कौन बनेगा करोड़पति

'जहां अकल है, वहां अकड़ है'

सारे अनुमानों और आशंकाओं को झुठलाते हुए 'कौन बनेगा करोड़पति' का इस बार का सीजन भी अमिताभ बच्चन ही होस्ट करेंगे। पिछले कुछ सीजन से यह आशंका बनी हुई थी, कि क्या इस शो को अमिताभ बच्चन ही होस्ट करेंगे या कोई और! लेकिन, इस बार इस तरह का कोई कंफ्यूजन नहीं है। क्योंकि, केबीसी का जारी हुआ प्रोमो और सोनी टीवी के ऑफिशल इंस्टाग्राम पर इस बात की औपचारिकता घोषणा कर दी गई है। नया शो 11 अगस्त से शुरू होगा।

कौन बनेगा करोड़पति' में अमिताभ बच्चन एक बार फिर से प्रतियोगियों से सवाल-जवाब करते नजर आएंगे। सोनी टीवी पर 11 अगस्त से 'कौन बनेगा करोड़पति' का नया सीजन शुरू होगा। शो का एक प्रोमो सामने आया है। सोनी टीवी ऑफिशियल के इंस्टाग्राम पेज पर भी 'कौन बनेगा करोड़पति' के कुछ प्रोमो भी शेयर किया गया। केबीसी के नए सीज़न के लिए जो थीम कैंपेन लॉन्च किया है, उसका नाम है 'जहां अकल है, वहां अकड़ है।' इस टैगलाइन के ज़रिए शो का उद्देश्य है ज्ञान केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि सोच, नज़रिया और आत्मविश्वास का भी नाम है। इस बार का कैंपेन समाज के उन लोगों की कहानियों को उजागर करता है, जो अपने ज्ञान, हिम्मत और आत्मबल के दम पर न सिर्फ अपने सपनों को सच कर रहे हैं, बल्कि समाज की रूढ़ियों को भी चुनौती दे रहे हैं। यह एक सामाजिक संदेश है कि अगर आपके पास ज्ञान है, तो आपको झुकने की ज़रूरत नहीं, आपकी अकड़ आपका हक है।'

पहले प्रोमो में एक अमीर आदमी एक गरीब आदमी का मजाक बनता है। अपने कारपेट से पैर हटाने के लिए कहता है। इस पर वह आदमी जानकारी देता है कि यह कारपेट ऐसे मटेरियल का बना है, जो गंदा नहीं होता है। दूसरा प्रोमो एक बैंक का है, जहां एक पैसे वाला बैंक में आकर अकड़ता है, उसे वहां का एक चाय वाला ऐसा करने पर क्या कानूनी कार्रवाई हो सकती है, इसका ज्ञान देता है। फिर एंट्री होती है, अमिताभ बच्चन की, वह कहते हैं, 'अक्ल है तो अकड़ है।' अमिताभ इन प्रोमो में अग्निपथ के विजय दीनानाथ चौहान के अंदाज में दिखे। प्रोमो में आगे अमिताभ बच्चन 'कौन बनेगा करोड़पति' के नए सीजन के टेलीकास्ट होने की तारीख बताते हैं। मगर यह बात वह विजय दीनानाथ चौहान के अंदाज में कहते हैं। यह चर्चित किरदार अमिताभ बच्चन ने फिल्म 'अग्निपथ' में निभाया था। दर्शकों को अमिताभ बच्चन का यह अंदाज काफी पसंद आया।

इंडिया में ज्ञान का सबसे बड़ा क्विज शो 'कौन बनेगा करोड़पति' (केबीसी) एक बार फिर अपने नए सीजन के साथ भव्य वापसी के लिए तैयार है। नए सीजन की शुरुआत करते हुए सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन ने एक नया और मजेदार कैंपेन लॉन्च किया 'जहां अकल है, वहां अकड़ है।' शो की रिलीज डेट और इसका प्रोमो भी आ गया। 'कौन बनेगा करोड़पति' का प्रोमो शुरू होते ही एक आदमी दिखाई देता है जो अपने ज्ञान से वहां बैठे हर किसी को चौंका देता है और कमजोर होकर भी अपनी बुद्धि से सबका दिल जीत लेता है। अमिताभ बच्चन की पहली झलक में इसमें दिखाई देती है।

प्रोमो के साथ केबीसी का रिलीज डेट भी सामने आ गया है। 11 अगस्त से शो सोमवार से शुक्रवार तक रात 9 बजे सोनी चैनल पर शुरू हो रहा है। 'कौन बनेगा करोड़पति' का 16वां सीजन इस साल फरवरी में खत्म हुआ। अप्रैल में, मेकर्स ने घोषणा की थी कि सीजन 17 के लिए पंजीकरण 14 अप्रैल से शुरू होंगे, जिसके बाद ऑडिशन और प्रतियोगियों का चयन होगा। नए सीजन का प्रीमियर 11 अगस्त को होगा। 25 साल पहले यह क्विज शो टीवी पर आया था।

अमिताभ बच्चन ही इसे होस्ट कर रहे हैं। बीच में शाहरुख खान ने भी एक सीजन होस्ट किया। मगर दर्शकों को अमिताभ बच्चन ही इस शो में पसंद आते हैं। वह प्रतियोगियों को शो के दौरान काफी मोटिवेट करते हैं। फैंस के कहने पर अपने करियर से जुड़े किस्से भी सुनाते हैं। अमिताभ बच्चन की मौजूदगी हर बार की तरह इस सीजन में भी शो की जान होगी। उनके सवाल पूछने का अनोखा अंदाज़, कंटेस्टेंट्स के साथ जुड़ाव, और उनकी प्रेरणादायक बातें हर एपिसोड को खास बनाती हैं। इस बार भी वो न सिर्फ हॉटसीट पर बैठे प्रतिभागियों को बल्कि पूरे देश को ज्ञान और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगे।

रियल बॉक्स

बूढ़े होते बॉलीवुड में 'सैयारा' की नवबहार

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हाल ही में प्रदर्शित यशराज की नई फिल्म 'सैयारा' बॉक्स ऑफिस पर कमाई और लोकप्रियता के नए-नए कीर्तिमान रच रही है। इस फिल्म की कहानी में कुछ नयापन नहीं है। तो फिर चुपके से आकर पर्दे पर अवतरित इस फिल्म में ऐसा क्या है, जो इसने इतनी सफलता और लोकप्रियता प्रदान की! इसका सीधा सा जवाब यही है कि बुढियाते बॉलीवुड के जंगल में 'सैयारा' की नई जोड़ी अहान पांडे और अनीता पड्डा में दर्शकों को नव पल्लव और नवबहार के दर्शन हुए। इसी ताजगी ने 'सैयारा' को सफलता की सीढ़ी पर चढाया है। वैसे तो हिन्दी सिनेमा खुद ही लगभग सवा सौ साल की यात्रा पूरी कर चुका है। लेकिन, इन सवा सौ साल में दर्शकों को हमेशा से युवा सितारों की चाहत होती है, जो बड़े परदे के माध्यम से उनके दिलों को धड़काए रखे तथा हमेशा ताजगी का अहसास कराए। लेकिन, सिनेमा की बाल्यावस्था के दौरान हिंदी सिनेमा को ऐसे सितारों ने धड़काया, जो खुद तो जवानी की दहलीज पार कर चुके थे। लेकिन उनके आकर्षण में दर्शक दर्शकों तक बंधे रहे। उस समय की बात इस मायने में अलग थी, कि तब सिनेमा को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता था और सभ्य समाज के कम ही लोग इससे जुड़ पाए थे। जो जुड़े भी थे, वह अपनी जवानी को पार कर चुके थे। लेकिन, आज यह हालत नहीं है। युवकों में मूंछों की कोर निर्मित होते ही वे हीरो बनने की सोचता है तो टीनएज का खिताब पाते ही युवतियां भी कैमरे के सामने खड़ा होने का सपना संजोने लगती हैं।

जब से सिनेमा ने ऐतिहासिक और पौराणिक काल से नाता तोड़ते हुए समाज और युवा समाज से नाता जोड़ा, परदे पर बाली उमर की प्रेम कहानियों ने जन्म लिया। ऐसी कहानियों को स्वाभाविकता देने के लिए युवा कलाकारों को ही सबसे ज्यादा पसंद किया जाता रहा है। यह सिलसिला पिछले एक दो दशक तक बदस्तूर जारी रहा। लेकिन, यदि आज के परिप्रेक्ष्य में बॉलीवुड के सफल सितारों पर नजर दौड़ाई जाए तो पता चलता है कि आज के लगभग सभी सफल सितारे जवानी की दहलीज तो क्या प्रौढ़ावस्था की सीमा रेखा को भी पार कर बुढ़ापे की ओर अग्रसर है। ऐसे में तो यही लगता है कि हमारा बॉलीवुड बुढा होता जा रहा है। पचास से लेकर सत्तर के दशक में हीरो ऐसे होते थे, जिनकी उम्र पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता था। तब हिंदी सिनेमा पर दिलीप कुमार, देव आनंद और राज कपूर की तिकड़ी ने बरसां तक राज किया। दर्शक इनकी अदाओं के इतने दीवाने थे, कि उन्होंने कभी इन सितारों की उम्र पर ध्यान नहीं दिया। देव आनंद तो ऐसे सदाबहार हीरो थे, जिन्होंने तीन-तीन पीढ़ियों के दर्शकों को अपने मोह जाल में उलझाए रखा। इन सितारों ने परदे पर भले ही जवानी को शिद्दत के साथ पेश किया, लेकिन खुद जवानी को पीछे छोड़ आए थे।

सत्तर के दशक में जब धर्मेंद्र, मनोज कुमार, विश्वजीत, शशि कपूर, जितेंद्र और राजेश खन्ना ने बॉलीवुड में पदार्पण किया तो वह भी एकदम जवान नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने हर दूसरी फिल्म में कॉलेज स्टूडेंट की भूमिकाएं निभाई और दर्शकों ने इन्हें भी पसंद किया। खासकर जितेंद्र और राजेश खन्ना को तो जवान ही माना गया। देखा जाए तो परदे पर जवानी की ताजगी की शुरुआत तब हुई, जब राज कपूर ने 'मेरा नाम जोकर' के फ्लॉप होने के हादसे के बाद डिंपल और ऋषि कपूर को लेकर 'बॉबी' का निर्माण किया। इस जोड़ी को देखकर पहली बार यकीन हुआ कि जवानी क्या होती है! इसके बाद कमल हासन और रति अग्निहोत्री की जोड़ी ने 'एक दूजे के लिए' में जवान जोड़ी के रूप में बाली उमर को सलाम कहने के लिए आमदा किया। इस परम्परा को सचिन और रंजीता की जोड़ी ने 'अंखियों के झरोखे से' आगे बढाया। ऋषि कपूर ने नीतू सिंह और पूनम ढिल्लों के साथ मिलकर दर्शकों को जवान बनाए रखने में मदद की।

आज जिन सितारों को हिट स्टार का दर्जा मिला। उनमें से लगभग सभी ने उस समय सिनेमा में प्रवेश किया, जब वे लगभग जवान थे। इनमें शाहरुख खान, सलमान खान, अजय देवगन, आमिर खान, अक्षय कुमार, गोविंदा, संजय दत्त, सुनील शेट्टी, जैकी श्रॉफ और सनी देओल शामिल हैं। जिस समय शाहरुख खान की 'दीवाना' प्रदर्शित हुई उनके चेहरे से जवानी रही थी। आमिर खान की कयामत से कयामत तक में जूही चावला के साथ उनकी जोड़ी जवां दिलों की धड़कन बनी हुई थी। जैकी श्रॉफ और मीनाक्षी शेषाद्री की 'हीरो' में वाकई हीरो नौजवान था। सलमान की पहली हिट फिल्म 'मैंने प्यार किया' में उनकी और भाग्यश्री की जोड़ी भी एकदम ताजगी से भरपूर थी। अजय देवगन की 'फूल और कांटे' भले ही मारधाड़ से भरपूर थी, लेकिन शक्ल- सूरत और डील डौल से वह कालेज के युवा छात्र ही दिखाई दे रहा था। गोविंदा तो लम्बे समय तक छोटे भाई के रूप में अपनी जवानी का जलवा बिखेरते रहे। जिन लोगों ने सनी देओल और अमृता सिंह अभिनीत उनकी पहली फिल्म 'बेताब' देखी है, उन्हें यह जोड़ी एकदम भोली और मासूम ही लगी है।

आज इन सभी सितारों के चेहरे पर न तो भोलापन है और न मासूमियत बची। आज सनी देओल वह कलाकार हैं जो इस युवा फौज के सबसे बुजुर्ग कलाकार है। आज वह उम्र के 68 बसंत पार कर चुके हैं। उनके साथ कदमताल कर रहे हैं जैकी श्रॉफ जो अब 68 साल के हो चुके हैं और जिस उम्र में वह नायक बने थे, आज उनका बेटा उसी उम्र को पार कर चुका है। इसके बाद नंबर आता है, संजय दत्त का जो 'रॉकी' के समय एकदम दुबले-पतले थे। लेकिन, आज विशाल काया को थाम कर 66 वर्ष की आयु को पार कर चुके हैं। संजय दत्त से दो ही कदम पीछे उनकी ही तरह एक्शन हीरो सुनील शेट्टी जो न केवल 64 साल की वय को लांघ चुके हैं, बल्कि भारतीय क्रिकेट टीम के सितारे केएल राहुल के ससुर भी बन चुके हैं।

चॉकलेटी चेहरे वाले गोविंदा की उम्र इतनी हो चुकी है जितनी उम्र में एक सरकारी कर्मचारी रिटायर हो जाता है। वह साठ साल से आगे निकल चुके हैं। हिंदी सिनेमा पर आज के सुपर स्टार खान बिग्रेड सलमान खान, आमिर खान और शाहरुख खान का दबदबा रहा है। संयोग की बात है कि इस समय इन तीनों खानों की आयु 59 साल है। बॉलीवुड को बुढ़ापे की सौगात देने वाले शेष सफल अभिनेताओं में 58 साल के अक्षय कुमार और 56 साल के अजय देवगन का नाम आता है। इन अभिनेताओं ने भले ही मुख्य नायक की भूमिका से अभी परहेज नहीं किया, लेकिन आज इनकी हिम्मत भी नहीं कि वह पेड़ों के आसपास नायिका के साथ प्रेम गीत गाते दिखाई पड़े। इन सब पर भारी पड़ते हैं, दक्षिण के सुपर स्टार रजनीकांत जो 74 साल के होने के बावजूद परदे पर जवान दिखाई देते है। यह बात और है कि उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में अपना असली रूप कभी छिपाया नहीं है।

यदि आज बॉलीवुड में मौजूद जवान नायकों की बात की जाए, तो उनमें कार्तिक आर्यन, सिद्धार्थ मल्होत्रा, वरुण धवन आयुष्मान खुराना, रणबीर कपूर, रणवीर सिंह जैसे गिने चुने नाम ही याद रह पाते है। इनमें भी यदि कार्तिक आर्यन को छोड़ दिया जाए तो रणबीर कपूर और रणवीर सिंह, सिद्धार्थ मल्होत्रा और वरूण धवन शादी कर जवानी को अलविदा कह चुके हैं। इस मामले में हीरोइनों की चर्चा इसलिए भी बेमानी है, क्योंकि परदे पर उनकी जवानी का जीवनकाल बहुत ही छोटा होता है। आज की तमाम नायिकाओं में ऐसी एक भी नायिका नहीं है जिसके चेहरे से जवानी की ज्वाला निकल रही हो। ऐसे में यदि यह कहा जाए कि बॉलीवुड बूढ़ा होता जा रहा है तो यह चिंतनीय है। क्योंकि, दर्शक परदे पर हमेशा ताजगी ही देखना चाहता है। गनीमत है कि 'सैयारा' की नवबहार ने इसमें प्राण फूंकने का काम किया है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

दो कलाकारों के साथ काम से बचते हैं संजय दत्त

लोकप्रिय कलाकार संजय दत्त का एक्टिंग करियर चार दशक से ज्यादा का हो गया। उन्होंने एक से बढ़कर एक फिल्मों में काम किया। संजय दत्त ने फिल्मों में हीरो से लेकर विलेन तक के किरदार निभाए हैं। उनके फैंस ने अपने पसंदीदा स्टार्स को हर किरदार में पसंद किया। अपनी बेहतरीन अदाकारी के लिए चर्चित संजय दत्त ने एक बार बताया था कि उनको बॉलीवुड इंडस्ट्री को दो स्टार्स के काम करने में डर लगता है। एक्टर का कहना है कि ये दोनों स्टार्स उनके रोल खा जाते थे।

संजय दत्त ने वैसे तो अपने आपमें बड़े कलाकार हैं। उनकी कई फिल्मों ने सफलता पायी है। संजय दत्त की अपनी जबरदस्त एक्टिंग से लोगों के दिल पर राज करते हैं। वह एक बार एक शो में पहुंचे थे, जहां उनसे एक सवाल किया गया था कि बॉलीवुड में कौन से सितारे हैं जिनके साथ काम करने में लगता कि वो आपका रोल पर भारी पड़ेगा! इस पर संजय दत्त ने गोविंदा और अमिताभ बच्चन का नाम लिया था। इस तरह से संजय दत्त ने स्वीकार किया था कि गोविंदा और अमिताभ बच्चन के साथ फिल्म में काम करने पर वह उनका रोल खा जाते थे। संजय दत्त ने गोविंदा और अमिताभ बच्चन के साथ कई फिल्मों में काम किया।

संजय दत्त का बैकग्राउंड फिल्मी रहा है। उनके पिता सुनील दत्त और मां नरगिस सिनेमा की दुनिया के बड़े सितारे रहे। संजय दत्त के फिल्मी करियर की बात की जाए तो वह उन्होंने साल 1981 में फिल्म 'रॉकी' से अपने करियर की शुरुआत की थी। संजय दत्त की डेब्यू फिल्म को उनको पिता सुनील दत्त ने डायरेक्ट किया था। इसके बाद संजय दत्त ने तमाम बड़ी फिल्मों में काम करके लोगों का ध्यान खींचा है। 65 साल हो चुके संजय दत्त अभी फिल्मों में एक्टिव हैं और उनकी पाइपलाइन में कई फिल्में हैं। संजय दत्त के फैंस उनकी फिल्मों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

पहली बार वाणी कपूर 'मंडला मर्डर्स' सीरीज में

नेटफ्लिक्स और वाईआरएफ एंटरटेनमेंट की बहुप्रतीक्षित माइथोलॉजिकल क्राइम थ्रिलर वेब सीरीज 'मंडला मर्डर्स' का प्रीमियर 25 जुलाई को हुआ। यह सीरीज़ न केवल अपनी अनूठी शैली के लिए चर्चा में है, बल्कि इसलिए भी खास है, क्योंकि इसके साथ वाणी कपूर डिजिटल डेब्यू कर रही हैं। यह शो वाणी के लिए इसलिए बेहद खास है, क्योंकि इसमें वे पहली बार प्रसिद्ध निर्देशक गोपी पुथरन के साथ काम कर रही हैं, जिनके निर्देशन में बनी 'मर्दानी' फ्रेंचाइजी को आलोचकों और दर्शकों दोनों ने खूब सराहा है।

वाणी कपूर ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि गोपी पुथरन के साथ 'मंडला मर्डर्स' में काम करना एक मास्टर क्लास जैसा है। वह जिस तरह से यथार्थवाद और मनोवैज्ञानिक गहराई को एक साथ पिरोते हैं, वह हर दृश्य को एक बहुपरतीय अनुभव बना देता है। उनके साथ काम करना सिर्फ प्रेरणादायक नहीं बल्कि एक ऐसी यात्रा है जो क्राइम थ्रिलर की परिभाषा ही बदल देती है। उन्होंने आगे कहा कि गोपी जी की सबसे खास बात यह है कि उनकी प्रामाणिकता के प्रति प्रतिबद्धता। वह हर कलाकार से यह अपेक्षा करते हैं कि वह अपने किरदार की अदृश्य परतों को तलाशे। यह प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण है, लेकिन उससे भी ज्यादा संतोषजनक। उनके साथ यह रचनात्मक यात्रा मेरे लिए एक सौभाग्य है और व्यक्तिगत रूप से बेहद परिवर्तनकारी रही है।

'मंडला मर्डर्स' नेटफ्लिक्स और यशराज फिल्म्स की संयुक्त साझेदारी का दूसरा प्रोजेक्ट है, जिसका आगाज़ वर्ष 2023 में आई हिट सीरीज़ 'द रेलवे मेन' से हुआ था। इस सीरीज में वाणी कपूर के साथ वैभव राज गुप्ता, सुरवीन चावला, और श्रिया पिलगांवकर जैसे दमदार कलाकार भी रहस्यमयी किरदारों में दिखाई दे रहे हैं। गोपी पुथरन द्वारा निर्देशित यह सीरीज़ मिथकीय प्रतीकों, गहन मनोविज्ञान, और अपराध की परतों से बुनी गई एक नई शैली की शुरुआत मानी जा रही है। मनन रावत इस शो के सह-निर्देशक हैं और इसका निर्माण वाईआरएफ एंटरटेनमेंट ने किया है।

सिनेमा में भी झूमा है सावन और भादो का महीना

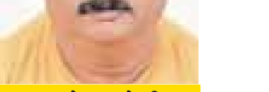
अशोक जोशी

इन दिनों वातावरण में सावन की गूंज सुनाई दे रही है। आसमान पर छाए काले बादल। उनसे बरसती फुहारें और हरियाली से धरती का बढ़ता श्रृंगार सभी सावन की सौगात है। यह सौगात प्रकृति तक ही सीमित नहीं रही है।

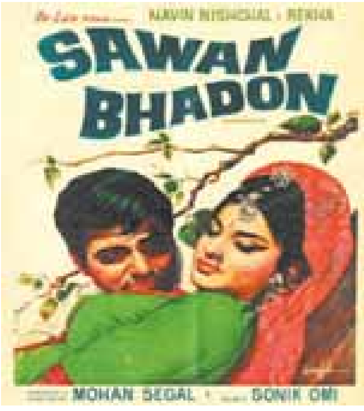

सावन ने जहां आम आदमी को आनंदित किया है वहीं सिनेमाई हस्तियों को भी अपनी फुहारों से सराबोर किया। यही कारण है, कि हर दूसरी फिल्म में सावन के नजारे दिखाई दे जाते है। यह बात अलग है कि सिनेमाई सावन कभी मनभावन होता है तो कभी दर्शकों को भिगोने में नाकामयाब होता दिखाई देता है।

सिनेमा का एक दस्तूर है कि यहां जो भी मिलता है उसका फिल्मकार इतना अधिक उपयोग करते हैं कि उसका सारा कस निकाल लेते हैं। फिल्मों में सावन को कुछ इस तरह निचोड़ा गया, कि कभी कभी परदे पर भर सावन में सूखे की स्थिति निर्मित हो जाती है। फिल्मकारों ने फिल्मों के शीर्षक से लेकर सिचुएशन और गीतों तक हर जगह सावन को भुनवाया। सावन को भुनाने का सिलसिला फिल्मों के टाइटल में सावन के उपयोग के साथ 1945 में ही आरंभ हो चुका, जब 'सावन' शीर्षक से मोतीलाल और शांता आप्टे ने दर्शकों को आकर्षित किया था। उसके चार साल बाद किशोर साहू को सावन की याद आई और उन्होंने 'सावन आया रे' कहते हुए दर्शकों को थिएटर तक खींचने का प्रयास किया। यह बात अलग है कि फिल्म में भले ही सावन आया, लेकिन थिएटर तक दर्शक नहीं आए। उसके छह साल बाद 1955 में 'सावन' नाम से दूसरी फिल्म बनी, जिसमें भारत भूषण और अमिता ने दर्शकों को भिगोने का काम किया।

बीसवीं सदी के छठे से सातवें दशक में भी निर्माता निर्देशक सावन को नहीं भूले। 1966 में थ्रिलर फिल्मों के निर्माता निर्देशक शक्ति सामंत ने मनोज कुमार और शर्मिला टैगोर को लेकर 'सावन की घटा' को सिनेमाघरों के ऊपर बरसाने का काम किया। ओपी नैयर के गीतों के दम पर दर्शकों को 'सावन की यह घटा' बहुत भायी। सावन का भरपूर फायदा 1969 में आई जे ओम प्रकाश की फिल्म 'आया सावन झूम के' को मिला। इस फिल्म में न केवल परदे पर सावन झूम के बरसा, बल्कि निर्माता की झोली भी हरी भरी हो गई। लेकिन, 1970 में दर्शकों के साथ सावन के नाम से ठगी कर 'सावन भादो' का भ्रम पैदा किया। फिल्म खूब चली, लेकिन दर्शक बिना भीगे रेखा और नवीन निश्चल पर प्यार की बरसात करते रहे। फिल्म में न तो सावन के सेहरे थे और न भादो की फुहार।

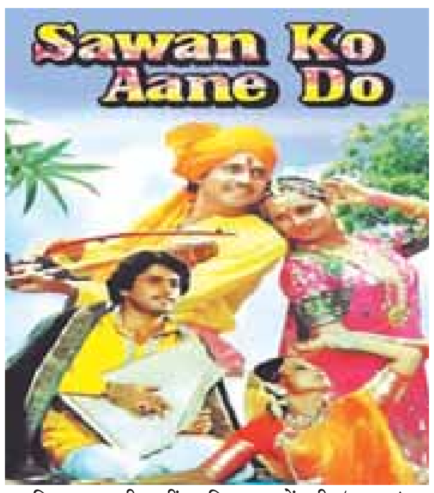

इसी तरह 1979 में प्रदर्शित श्रीदेवी की पहली फिल्म 'सोलहवां सावन' में जो सावन दिखाई दिया, उसमें आसमान के बजाए श्रीदेवी का हुस्न ही ज्यादा बरसा। सावन का उपयोग करते हुए राजश्री ने 'सावन को आने दो' बनाई, तो जितेन्द्र के भाई प्रसन्न कपूर ने 'प्यासा सावन' का निर्माण किया। लेकिन, इन फिल्मों से न तो सावन आया और न दर्शकों की प्यास ही बुझ पायी। मजे की बात तो यह है कि भारत ही नहीं पाकिस्तान में भी 'सावन' शीर्षक से फिल्म बन चुकी है। फिल्मों में सावन का उपयोग कभी खुशियां मनाने, कभी प्रेम का इजहार करने के लिए किया गया है तो कभी गम की गहराई को उजागर करने के लिए सावन का उपयोग किया गया। इसके लिए अधिकांश फिल्मकारों ने सावन को संबोधित करते हुए गीतों का सहारा लिया। यही कारण है कि फिल्मों के शीर्षक से ज्यादा फिल्मी गीतों में सावन बरसा। वैसे तो बरसात और बारिश को लेकर हर दूसरी फिल्म में गीत बनाए गए। लेकिन, जिन गीतों में सावन शब्द का उपयोग हुआ है उनका असर भी कुछ कम नहीं है।

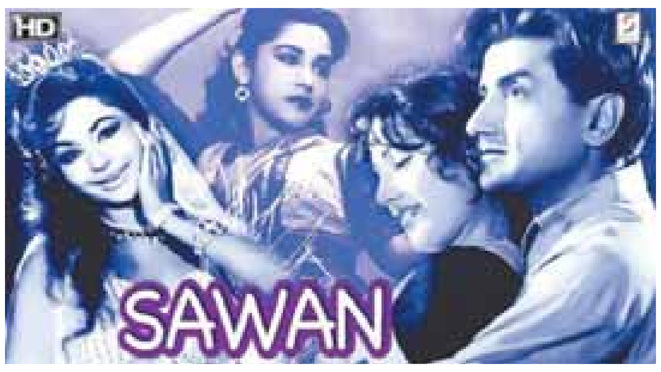

एक निर्माता गीतकार ऐसे भी है जिनका अपना नाम ही सावन कुमार है। निर्माता सावन कुमार की फिल्मों में सावन का भले ही उपयोग कम हुआ हो, लेकिन उनके लगभग सभी गीतों में 'सावन' शब्द उपयोग किया गया है। चाहे वह 'हवस' के गीत तेरी गलियों में ना रखेंगे कदम का अंतरा हो घिर के आएंगी घटा फिर से सावन की या 'सनम बेवफा' के गीत चूडी मजा न देगी का तेरे बिना साजन सावन मजा न देगा ही क्यों न हो। सावन कुमार ने अपने सभी गीतों में सावन शब्द का अनिवार्य रूप से उपयोग किया है।

पुराने संगीतकारों में रोशन ने बरसात की रात में शास्त्रीय संगीत को आधार बनाकर गरजत बरसत सावन आयो रे प्रस्तुत किया तो मदन मोहन ने सावन के महीने में एक आग सी सीने में जैसा गीत बनाया। 'दो बीघा जमीन' का गीत हरियाला सावन ढोल बजाता आया धरती के श्रृंगार का प्रतीक है। लक्ष्मीकांत प्यारेलाल को सावन शब्द से कुछ ज्यादा ही लगाव रहा है। आनंद बक्षी के साथ उन्होने कई लोकप्रिय गीतों में सावन बरसाया है। इनमें सावन का महीना पवन करे सोर, रिमझिम के गीत सावन गाए, तेरी दो टकिया की नौकरी मेरा लाखों का सावन, आया सावन झूम के, कुछ कहता है यह सावन, मैं प्यासा तुम सावन शामिल है।

राहुल देव बर्मन को भी यह सावन बड़ा सुहावना लगा। उन्होंने मेरे नैना सावन भादो, बेचारा दिल क्या करे सावन जले भादो जले, सावन के झूले पड़े तुम चले आओ, अबके सावन में जी डरे, रिमझिम गिरे सावन और सावन जो अगन लगाए जैसे गीत रचे तो उनके पिता एसडी बर्मन ने अबके सजन सावन में आग लगेगी मन में जैसा मधुर गीत रचा। शिव-हरी की जोड़ी ने 'चांदनी' में लगी आज सावन की फिर वो झडी है रचकर दिल के दर्द को बढ़ाने की कोशिश की। अब जब आसमान से सावन की बूंदे बरस रही है सावन के इन गीतों का स्मरण सावन और सावन के एहसास को कुछ और ज्यादा रंगीन बना देता है।

बच्चों से करते प्यार, संस्कार से कैसे करें इनकार!

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

बाआजकल के मां-बापों की यह बुरी आदत है कि बच्चों को संस्कार नहीं देते हैं या तो इनके पास इतने कम होते हैं कि सोचते होंगे, हमने इन्हें दे दिए तो फिर बुढ़ापे में हम क्या करेंगे। यह भी होता होगा कि जल्दी क्या है, पड़े तो हैं अपने पास, दे देंगे कभी भी, कौन भागे जा रहे हैं संस्कार। यह भी संभव है कि वसीयत के लिए छोड़ रखे हों कि और कुछ तो है नहीं, मरने के बाद यही बच्चों के काम आ जाएंगे। यह सरासर लापरवाही और लेतलाली है कि संस्कार भरे पड़े हैं और अपना हाथ खुलता नहीं है।

बच्चे भी बेचारे स्कूल के मास्टर या खेल के कोच या मोहल्ले के दादा से तो संस्कार लेने नहीं जा सकते ना। यही सुनने को मिलेगा कि घर में संस्कार की कमी है क्या, जो बाहर जाकर हाथ फैला रहे हो। धन-संपत्ति, मकान-दुकान और प्रॉपर्टी के बारे में तो फिर भी खातरी रहती है कि अपने को ही मिलेगा, इसलिए औलादें निश्चित रहती हैं, लेकिन उन्हें संस्कार के बारे में कोई बताने वाला तो हो कि ये भी तुम्हारे मां-बाप के पास कम नहीं है, फिर यह भी चक्कर है ना कि जब तक कोई कांड ना कर दे, पता भी तो नहीं चलता कि परिवार में संस्कार का लेन-देन हुआ भी है या नहीं!

कभी बच्चों को पास बैठा कर समझाया या बताया भी है कि अपने पास कुल कितने संस्कार हैं और अब इस लायक हो रहे हो कि जल्दी से जल्दी ये संस्कार तुम्हारे हवाले कर दिए जाएं। ज्यादातर मां-बाप तो यह भी नहीं जानते होंगे कि कौन से अपने संस्कार हैं और कौन से खानदानी हैं। चेहरा देख कर तो बता सकते हैं कि लड़की, मां पर गई है और लड़का, बाप की ट्रू-कॉपी है, लेकिन संस्कार में यह लफड़ा रहता है कि कौन-सा, किसका... कई बार घालमेल हो जाता है। इसीलिए विद्वान नेता-वक्ता का यह कहना रहता है कि मां को चाहिए कि लड़की को संस्कार दे और पिता के जिम्मे लड़के को संस्कारवान बनाना होता है।

मोहल्ले के दादा को यह समझ थी तो उन्होंने लड़के को संस्कार दिए कि कोई सरकारी अधिकारी कहा नहीं माने तो बल्ले से पीट देना चाहिए। वही संस्कार अब पीढ़ियों तक चला जा रहा है। अगर यही संस्कार लड़की को मिल गया होता तो चार दिन भी ससुराल में रह पाती क्या! ना जाने किसका सिर फोड़ घर आ जाती, इसलिए यह विभाजन रेखा तय की गई है कि मां की जिम्मेदारी है कि लड़की को संस्कार दे और पिता के संस्कार से यथासंभव दूर ही रखे, वरना मर्डर तो होने ही हैं।

एक बात और... संस्कार ही हैं, जहां मां और बाप समान हैं। सम्पत्ति में मां का तिनका भर हिस्सा ना हो, लेकिन संस्कार में तो बराबरी का मामला है, ना कोई छोटा, ना बड़ा! ना कोई कम, ना कोई ज्यादा! और कहीं भी बराबरी नहीं हो, लेकिन यहां तो समाजवाद स्थायी है, इसलिए जब लड़की अपने मन का करने लगती है तो पिता फिर मां को ही ठांसता है और समाज भी कि 'ये ही संस्कार दिए हैं तुमने।'

विद्वान नेता, मंत्री, विचारक भी यह बात कह चुके हैं कि लड़की को संस्कार पिता नहीं मां दे। महिला का, महिला के लिए! आजकल के पिता यह गूढ़ बात समझ ही नहीं पा रहे हैं और लड़की को भी संस्कार देने लग पड़ते हैं। लड़की से प्रेम जताना अलग बात है, लेकिन यदि पिता ने लड़की को संस्कार दिए तो अनर्थ तो होना ही है।

अभी किसी ने अपना नमूना बताया कि कैसे मां ने उन्हें खाने से पहले बार-बार लगातार संस्कार दिए थे। यह रहस्य कम ही लोगों को ज्ञात होगा कि बच्चा जब भूखा हो तभी उसे संस्कार देने चाहिए, भोजन के साथ अच्छे से हजम हो जाते हैं। 'भूखे भजन नहीं हो सकते', लेकिन संस्कार तो पानी से भी उतारे जा सकते हैं। अपनी जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग के लड़के को पहचानने की समझ बालिग हो चुकी लड़की को नहीं होती है। यही वजह है कि चार-पांच साल अफेयर में रहने के बाद भी उसे समझ नहीं आता कि दूसरी कास्ट का है और नाम बदल लिया है। लड़कों के साथ यह दिक्कत नहीं है कि कोई लड़की उन्हें उल्लू नहीं बना सकती, क्योंकि पिता अपनी जिम्मेदारी पूरी गंभीरता से निभाते हैं और इस मामले में इतने संस्कार टिका देते हैं कि लड़का भूल कर भी लड़की की जाति पहचानने में गलती नहीं कर सकता है।

कायदे से अब सनातनी सरकारों की यह जिम्मेदारी है कि अपने यहां 'संस्कार-मंत्रालय' बनाए और 'आतंकियों की बहन' जैसे सद्-विचारवान को मंत्री बना दें। बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए मां-बाप संस्कारी शिविर का आयोजन करें, क्योंकि बच्चे तो क्या इनकार करेंगे, मां-बाप को ही देना आना चाहिए। समझाया जाना चाहिए कि बच्चों को, और कुछ दें या ना दें, संस्कार जरूर दें। फिर यह नहीं देखें कि संस्कार नए हैं या बाबा आदम के जमाने के। यह बात समझानी होगी कि संस्कार हमेशा अच्छे ही होते हैं और नहीं भी होते हों तो क्या, संस्कार तो हैं ना! इस बात का ध्यान तो सनातनी सरकारें रखेंगी ही कि विजातीय के हत्थे ये संस्कार ना लग जाएं, क्योंकि अपने भले ही काम ना आएं, अपने संस्कार तो हमेशा अपने साथ रहते हैं।

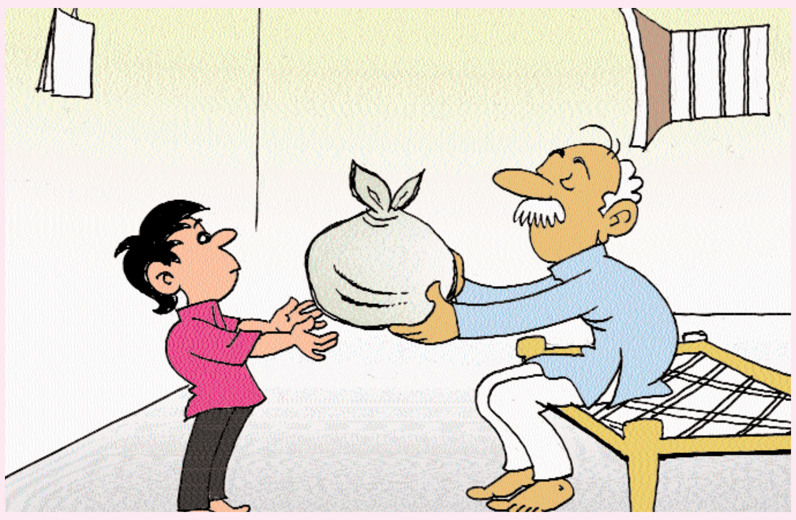

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

"विषैले होते रिश्ते..."

ज़िंदगी में केवल अपने काम और जिम्मेदारियों के अलावा और भी रिश्ते है जिन्हें आप इग्नोर नहीं कर सकते। बच्चों के साथ आपका रिश्ता एक स्तर पर आकर दोस्तों जैसा होता है पर बीच बीच में आपका पिता या माँ होने का स्तर बढ़ जाता है बच्चा भौंचक रह जाता है जिन बातों को उसने आपको दोस्ती में शेअर की अपनी कमज़ोरियाँ भी, अब आप उसी को ब्लैकमेल कर उसे दबाने की कोशिश कर रहे है ये फेअर नहीं है अब उसके और आपके रिश्ते में ज़हर फैलना शुरू हो गया अब आप इस रिश्ते को तोड़ नहीं सकते इसके लिये आपको उनका पुनः विश्वास जीतने के लिये बहुत लंबे धैर्य की आवश्यकता है कोशिश करते रहिये कोमल हृदय पर लगी चोट धीरे धीरे भरती है।

कैसे हैं ये रिश्ते अजीब से
बनाने की करो कोशिश
तो, बिखर जाते हैं
बिखरा ही रहने दो इन्हें,
तो अपने आप में सिमट जाते हैं।
क्यों ना हम कछुए सदृश्य हो जायें ......
खुशी आने पर खुश रहें मुस्कुरायें ......
दुखों के बवण्डर से,
जूझने के बजाय,
खोल में मुँह छिपा कर
चुपचाप सो जायें।

'Toxic Relationship' होती क्या है। लोग समझते हैं ये केवल पति पत्नी या पार्टनर में होती है जिसमें आपस में झगड़ना, एक दूसरे की बुराई करना, शक करना, एक दूसरे की ज़िंदगी को कंट्रोल करने की कोशिश करना, एक दूसरे पर विश्वास ना करना, एक दूसरे का मोबाइल चैक करना ये सब बातें आपके रिश्ते को विषैला बनाने की कोशिश करती हैं, या बना ही देती है इस रिश्ते में एक लंबे समय से आप फिजिकली, मेंटली विषैलापन झेल रहे हैं तो वक्त आ गया है आप थैरेपी लें या एक साथ बैठकर बात करें। इस रिलेशनशिप का मुख्य आधार प्यार और विश्वास है जो अगर ठीक नहीं हो पा रहा है तो आपका अलग रहना ही उचित है, दूरी से शायद प्यार और विश्वास की कीमत समझ आती है

ज़िंदगी में केवल अपने काम और जिम्मेदारियों के अलावा और भी रिश्ते है जिन्हें आप इग्नोर नहीं कर सकते। बच्चों के साथ आपका रिश्ता एक स्तर पर आकर दोस्तों जैसा होता है पर बीच बीच में आपका पिता या माँ होने का स्तर बढ़ जाता है बच्चा भौंचक रह जाता है जिन बातों को उसने आपको दोस्ती में शेअर की अपनी कमज़ोरियाँ भी, अब आप उसी को ब्लैकमेल कर उसे दबाने की कोशिश कर रहे है ये फेअर नहीं है अब उसके और आपके रिश्ते में ज़हर फैलना शुरू हो गया अब आप इस रिश्ते को तोड़ नहीं सकते इसके लिये आपको उनका पुनः विश्वास जीतने के लिये बहुत लंबे धैर्य की आवश्यकता है कोशिश करते रहिये कोमल हृदय पर लगी चोट धीरे धीरे भरती है।

अब आता है आपका बॉस से रिश्ता, इस रिश्ते में अनुशासन बहुत ज़रूरी है ज़्यादा दोस्ताना संबंध ना बनाये ये वाला दोस्त कभी भी बॉस हो जाता है इस रिश्ते में कोशिश करें कड़वाहट ना आयें ये आपकी कमाई का ज़रिया है।

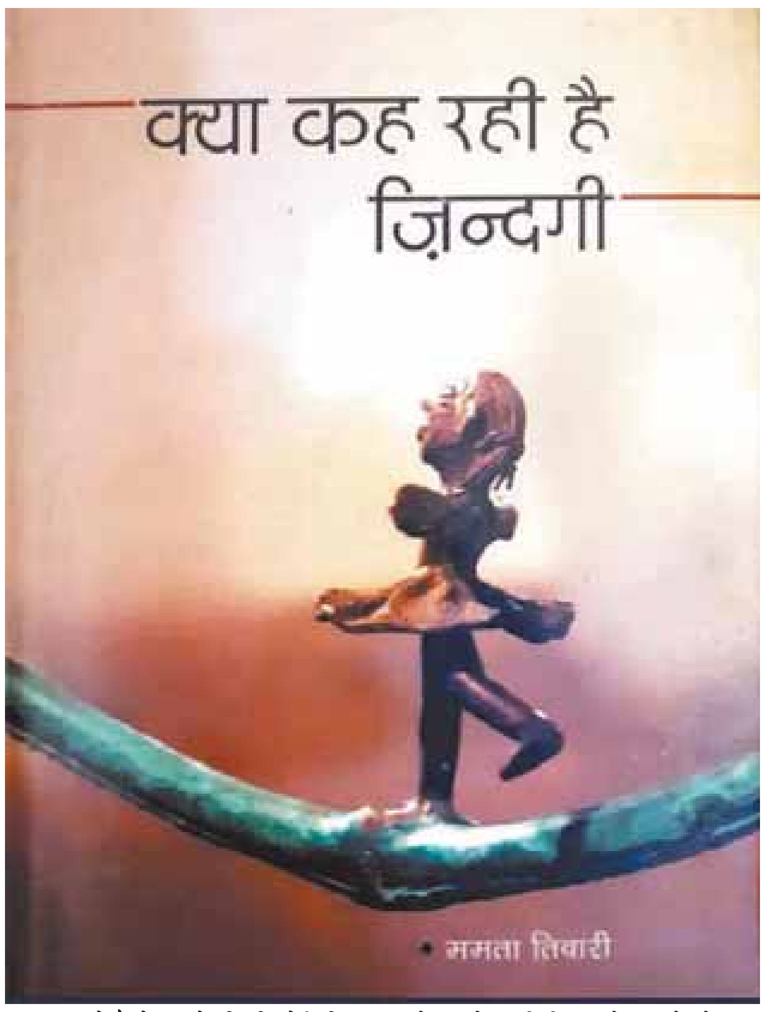

अब आते हैं दोस्त। दोस्ती की कोई सीमा नहीं है बहुधा देखा गया है एक ही थाली में खाने वाले दोस्त, एक वक्त ऐसा आता है जब एक दूसरे की शक्ल देखना पसंद नहीं करते है। मेरी इक दोस्त की गुडमार्निंग के फोन से रात की गुडनाइट कॉफी वाली दोस्त के साथ दोस्ती थी उनकी दोस्ती की मिसालें दी जाती थी फिर इक दिन जाने क्या हुआ उस लड़की ने मेरी दोस्त के घर जाकर उसके परिवार वालों जिसमें उसके सास ससुर भी थे उनके सामने जाकर वो सब बातें कह दी जो मेरी दोस्त ने उससे शेअर की थी आज उसका ससुरालवालों से रिश्ता अच्छा नहीं है। दोस्ती टूट गई वो अलग। बेहतर ये होगा दोस्त पे भरोसा रखें उतनी ही बात शेअर करें जो खुल जाने पर आपको नुकसानना पहुँचायें। जब सहन ना हो धीरे धीरे दूरी बढ़ाते जायें कोई ज़रूरत नहीं है आप लड़ाई झगड़े से रिश्ता ख़त्म करें।

ज़रूरी तो नहीं
दोस्त हर बात साझा करें
पर इतना तो ज़रूरी है
जो भी करें साझा
वो ख़रा हो।

अब आते है रिश्तेदार। क्या आपकी दुनिया में ऐसे रिश्तेदार हैं जो आपकी तरक्की आपका परिवार, आपका रहन सहन देख कर खुश होते है या आप आये दिन नज़र उतरवाते फिरते हैं। कुछ रिश्तेदार बहुत महत्वपूर्ण और नज़दीकी होते है अनके साथ अगर रिश्ता रखना ज़रूरी है तो थोड़ा संभलकर दूरी बना कर रखें। जो रिश्तेदार आपके पार्टनर, परिवार आपके बीच ज़हर फैला रहे है उनसे धीरे धीरे करके रिश्ता ख़त्म कर दे वो आपकी ज़िंदगी के लिये जरूरी नहीं। मेरी एक नज़दीकीरिश्तेदार है ख़ुद उनकी बहन ने उनके बीच गलत सलत बातें फैलाई आज वो एक दूसरे का मुँह भी नहीं देखती। किसी को इतना अधिकार ना दे कि वो आपके रिश्तों में घुसपैठ करे सहन ना हो तो शालीनता से उनसे रिश्ता ख़त्म कर दें।

सबसे अहम् रिश्ते को कैसे जाने दे या शायद आप इसे अहम् की श्रेणी में ना रखती हो आपका और आपके घरेलू मददगार का। इस रिश्ते में बहुधा गलती हमारी ही होती है। हम उन्हें अपनी प्रापर्टी समझना बंद करें उनके भी बच्चे बीमार होते है उनके भी तीज त्यौहार होते है उनके घर में भी समस्या आती है उनसे घर के सदस्य जैसा व्यवहार करें उन्हें इतना ना चिढ़ा दे कि वो गलत कदम उठाने पर मजबूर हो जायें। घरेलू मददगार आपके रिश्तेदारो से कहीं ज़्यादा करीबी होता है उसे आपकी सब बातें पता होती है उससे इंसान कीतरह व्यवहार करें वो हर त्यौहार पे ईनाम का हक़दार है। अपना त्यौहार छोड़ वो आपकी खुशी में साथ देता है। बार बार घरेलू मददगार बदलने से आप बदनाम हो जायेगी। अगर आप अपने घरेलू कुत्ते से दुत्कार के बात करेंगी तो वो भी आपके हाथ से खाना नहीं खायेगा।

तो कुल मिलाकर कोशिश करें कि रिश्तों में कड़वाहट ना आये। अगर आ गई हो तो उसे बातों से दूर भगाने की कोशिश करें। बात फिर भी ना बनें तो दूरी बढ़ायें और जो ये प्रयोग भी ना चलें तो इस कड़वे रिश्ते को ख़त्म कर दे।

चूंकि हम भारतीय जुड़ के रहना पसंद करते हैं, हम तो टेक्नों में, अस्पताल में बैठे लोगों से दोस्ती बना लेते है तो नये रिश्ते बनाते रहने के बजाय पुराने रिश्तों को धूप दिखाये, उन्हें पास बिठाये और प्रेम से मुस्कुरा के रोज़ पूछे (फोन पे) और क्या कह रही है ज़िंदगी?

मरीज उलझा विज्ञान में या विशेषज्ञ के रवैये में?

मेडिकल सुपरस्पेशलिटी

डॉ. सत्यकांत त्रिवेदी

लेखक मनोचिकित्सक और स्तंभकार हैं।

चिकित्सा विज्ञान आज जिस गति से विकसित हो रहा है, वह निस्संदेह प्रभावशाली है। नई बीमारियों की पहचान, जीन स्तर पर इलाज की संभावनाएँ, रोबोटिक सर्जरी, और सैकड़ों नई शाखाएँ यह सब आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियाँ हैं। इसी विकास क्रम में सुपरस्पेशलिटी का जन्म हुआ, जिसने स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक विशिष्ट, लक्ष्यित और तकनीकी बना दिया।

लेकिन जैसे-जैसे यह विस्तार हुआ, कुछ बुनियादी प्रश्न भी सामने आए। क्या यह वैज्ञानिक प्रगति मरीज़ों की मदद कर रही है, या उन्हें एक ऐसे जटिल तंत्र में उलझा रही है जहाँ उसका मनुष्यता से संबंध धीरे-धीरे कम होता जा रहा है?

वरिष्ठ डॉक्टरों से संवाद में एक चिंता उभरकर सामने आई ,विशेषज्ञता की शाखाएँ इतनी अधिक हो गई हैं कि अब मरीज़ को यह समझना कठिन होता है कि उसे किस विशेषज्ञ के पास जाना है। एक साधारण लक्षण से शुरू होकर वह कई विभागों और डॉक्टरों की श्रृंखला से गुजरता है, जहाँ हर कोई अपनी सीमित दृष्टि से जाँच करता है, और समग्र परिप्रेक्ष्य अक्सर छूट जाता है।

यहाँ यह सोचना ज़रूरी हो जाता है कि क्या समस्या विशेषज्ञता में है या विशेषज्ञ में। क्या यह ज्ञान की गहराई है या उस गहराई को व्यवहार में लाने की अक्षमता? विज्ञान जितना सूक्ष्म हो गया है, उतना ही शायद हमारी दृष्टि खंडित हो गई है। एक ही मरीज़, एक ही रोग लेकिन अलग-अलग विशेषज्ञों के अलग-अलग दृष्टिकोण। यह परिष्कार है या उलझाव?

इस संदर्भ में एक और चिंता है जो कम चर्चा में आती है ,मरीज़ की भूमिका में आया मौन बदलाव। पहले जहाँ मरीज़ एक व्यक्ति था, अब वह प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला का हिस्सा बन गया है। परीक्षण, इमेजिंग, रेफरल, डेटा, प्रोटोकॉल इन सभी के बीच मरीज़ की भावनाएँ, डर और आशाएँ कई बार अनकही रह जाती हैं।

संस्थानों की संरचना, संसाधनों का वितरण, और तेजी से बढ़ती स्वास्थ्य संबंधी अपेक्षाएँ ये सभी एक साथ मिलकर एक ऐसा वातावरण बना रहे हैं जिसमें चिकित्सक भी एक प्रकार के दबाव में कार्य करता है। यह दबाव कभी आर्थिक होता है, कभी समय का, और कभी तकनीकी दक्षता का। ऐसे में चिकित्सा में करुणा और संवाद का स्थान सीमित होता जा रहा है।

क्या इसका कोई हल है? ज़रूर है। हमें उस डॉक्टर की कल्पना फिर से करनी होगी जो केवल परीक्षणों और रिपोर्ट्स से नहीं, मरीज़ की आँखों और शब्दों से उसकी स्थिति को समझे। ऐसी प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें विशेषज्ञता एक-दूसरे के साथ समन्वय में हो, न कि प्रतिस्पर्धा में। रेफरल और इलाज की प्रक्रिया जितनी सरल, मानवीय और पारदर्शी होगी, मरीज़ की यात्रा उतनी ही कम कष्टकारी होगी।

हालांकि कई चिकित्सक ये मानते हैं कि शायद बड़ी समस्या विज्ञान के विस्तार में न होकर, उसे हैंडल करने वाले वैज्ञानिकों में है।

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

देखने वाले तो हैं, मसले अटका रहे हैं!

भावुक फिल्में देखकर ऐसा होना नई बात नहीं है। मां-पिता की पीढ़ी में अनगिनत ऐसे मिल जाएंगे, जिन्होंने अमिताभ बच्चन की फिल्में देख हाथ-पैर चलाए और तुड़वाए। दौर था, जब फिल्मों में काम करना, देखना और गाने सुनना टेढ़ी नजर से देखा जाता था। वो दौर भी रहा, जब राजेश खन्ना की गाड़ी की धूल से लड़कियां मांग भरा करती थीं, खून से लिखे खत भेजती थीं और कार पर लिपस्टिक के चुंबन देती थीं! शाहरुख, सलमान खान, अजय देवगन, अक्षय कुमार के फैंस के अलग जलवे हैं।

फिल्म 'सैयारा' से ज्यादा खबर देखने वालों की आ रही हैं कि कोई बेहोश हो रहा है, कोई रो रहा है, किसी को सीपीआर की जरूरत है, किसी का दिमाग ब्रेकडाउन हो रहा है... और भी न जाने क्या-क्या। कई हैं, जो इस पीढ़ी को कमजोर बता रहे हैं कि असली दर्द भरी फिल्में तो देखी ही नहीं, लेकिन अभी कारण कुछ और है।

भावुक फिल्में देखकर ऐसा होना नई बात नहीं है। मां-पिता की पीढ़ी में अनगिनत ऐसे मिल जाएंगे, जिन्होंने अमिताभ बच्चन की फिल्में देख हाथ-पैर चलाए और तुड़वाए। दौर था, जब फिल्मों में काम करना, देखना और गाने सुनना टेढ़ी नजर से देखा जाता था। वो दौर भी रहा, जब राजेश खन्ना की गाड़ी की धूल से लड़कियां मांग भरा करती थीं, खून से लिखे खत भेजती थीं और कार पर लिपस्टिक के चुंबन देती थीं! शाहरुख, सलमान खान, अजय देवगन, अक्षय कुमार के फैंस के अलग जलवे हैं।

इस सबके बावजूद भारत में जहां फिल्में देखने वाली आबादी भी है, शौक भी हैं, सिनेमाघरों की भी भरमार है और पैसे वालों के बारे में तो पूछिए ही मत, अकेले मुंबई में हजारों की तादाद में अरबपति हैं, लेकिन 'मामी' जैसा शानदार फिल्म फेस्टिवल कैंसिल हो गया है।

'मामी' फिल्म फेस्टिवल 1997 में शुरू हुआ और श्याम बेनेगल इसके चेयरपर्सन थे। पैसे की कमी से 2014 में फेस्टिवल कैंसिल ही हो गया था, लेकिन फिर फिल्मी स्टाइल में मुकेश अंबानी और विधु विनोद चोपड़ा के सहारे फेस्टिवल तूफान से निकल आया। फेस्टिवल को नई टीम मिली और पांच बरस बेहतरीन गुजरे। सिर्फ मुंबई ने नहीं बल्कि देश भर और बाहर से आए लोगों ने फेस्टिवल और फिल्मों की तारीफ की। पीवीआर जुहू में इंटरनेशनल और देसी फिल्मों के लिए लाइन देख कर सिनेप्रेमी खुश होता था कि वाह! अच्छी फिल्म को देखने वाले हैं और यह भी एहसास था कि इतनी भीड़ है तो अंदर जगह नहीं मिलेगी। 'मामी फिल्म फेस्टिवल' ने कई को उस सिनेमा से मिलवाया, जो आम कमाऊ फिल्मों से अलग है। अलग भाषा की फिल्में परदे पर कहानी कहने चूकती नहीं हैं।

अफसोस इस फेस्टिवल को कोई सहारा देने वाला नहीं मिला। सिर्फ पैसे से नहीं, बात यह भी है कि सत्ताइस बरस बाद कैंसिल हो गया, क्योंकि मसले फेस्टिवल के रहते भी सुलझाए जा सकते थे। पिछले साल ही मामी फेस्टिवल छोटा किया था और आगे भी किया जा सकता है।

लंदन में 'लंदन इंडियन फिल्म फेस्टिवल' और 'यूके एशियन फिल्म फेस्टिवल' लगभग पच्चीस बरस से हो रहे हैं। दोनों में कई बार फुलहाउस देखने को तरस जाते हैं, लेकिन 'मामी' के जलवे ही कुछ और हैं, वहां भीड़ घंटों पहले आ जाती है। उम्मीद करें, जो भी मसले हैं, सुलझें और फेस्टिवल फिर से उनके लिए लौटे जो फिल्मों को प्यार देते हैं।